www.thearyasamaj.org

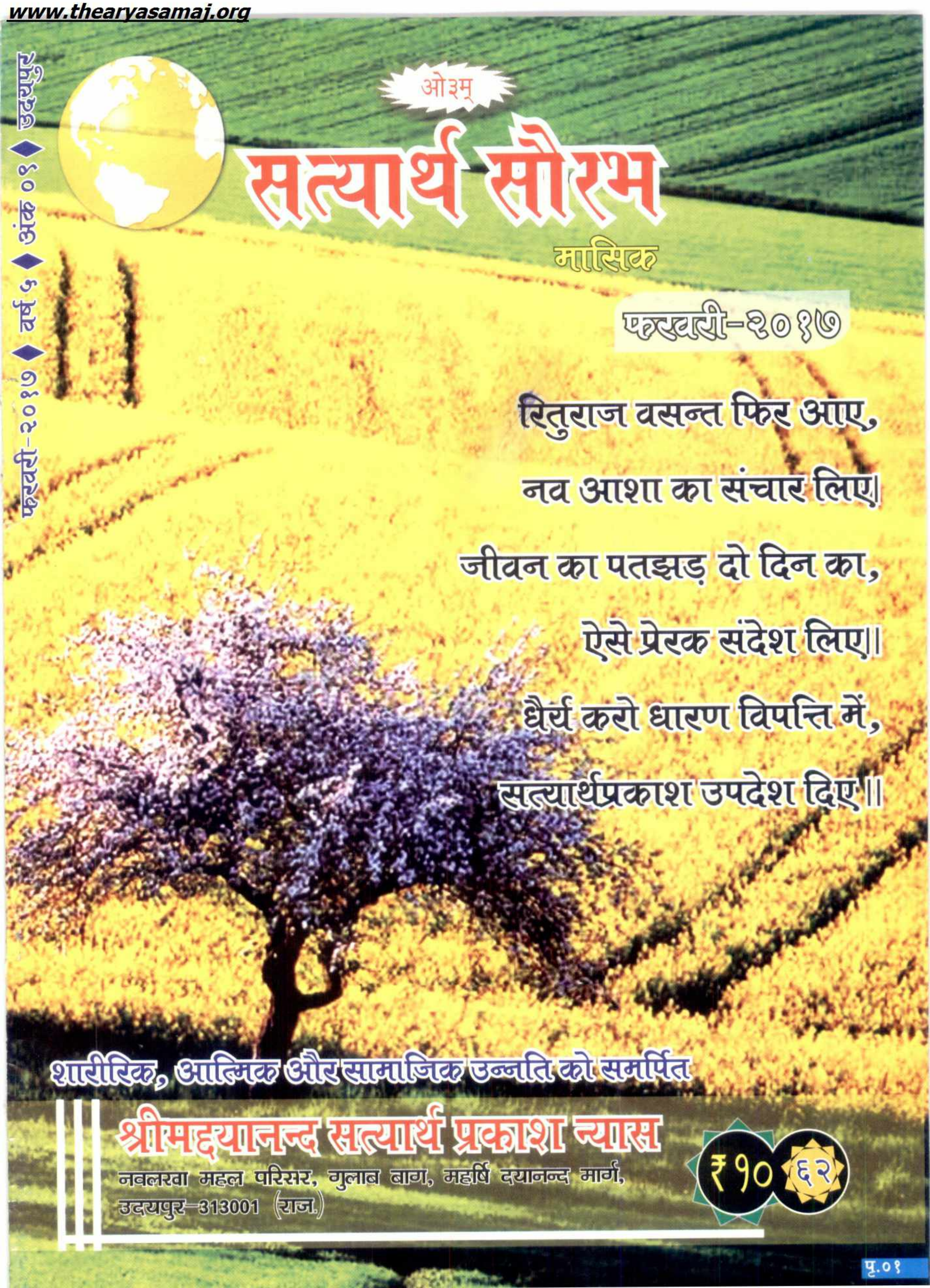

फरवरी-२०१७ ◆ वर्ष ६ ◆ अंक ०१ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

फरवरी-२०१७

रितुराज वसन्त फिर आए,
नव आशा का संचार लिए।
जीवन का पतझड़ दो दिन का,
ऐसे प्रेरक संदेश लिए।।
धैर्य करो धारण विपत्ति में,
सत्यार्थप्रकाश उपदेश दिए।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ६२

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग
नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक
सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११७
माघ शुक्ल एकादशी
विक्रम संवत्
२०७३
दयानन्दाब्द
१९२

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

०५ किस किस ने लगाया मोदी की योजना में पलीता

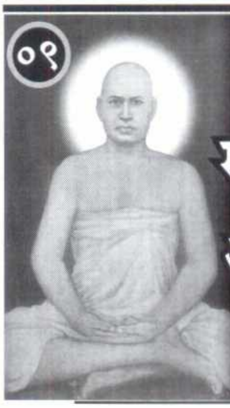

०९ महर्षि दयानन्द सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग के आदर्श उदाहरण

February - 2016

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन	३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

स मा चा र २५

ह ल च ल २६

०४ वेद सुधा
११ हिंसा का अल्पीकरण
१२ धर्म की आवश्यकता क्यों?
१४ सत्य सखा महर्षि दयानन्द सरस्वती
१६ मर रहा जीव जी रहा शरीर है
१८ रानी नायका और राजा भीमदेव
२१ दुनिया मतलब की
२२ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०२/१७
२३ ऋषि बोध से बोध
२७ प्रातःकालीन भ्रमण स्वास्थ्यप्रद
२८ कथा सरित- बुलन्द हौंसले
२९ सत्यार्थ पीयूष- राजा कैसा?

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ५ अंक - ०९

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

दिव्य दर्शनीय महाकाव्य

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।। - अथर्व. १०।८।३२

ऋषिः कुत्सः।। देवता-अध्यात्मम्।। छन्दः-उपरिष्टाद्विराड्बृहती।।

विनय- मनुष्य परमेश्वर को कभी त्याग नहीं सकता, कभी उससे जुदा नहीं हो सकता, क्योंकि यह परमेश्वर के इतना सन्निकट है, इतना घनिष्ठ संबंधों से जुड़ा है कि परमात्मा उसकी आत्मा की आत्मा है, पर आश्चर्य है कि इतना निकट होते हुआ भी वह अपने परमात्मा को देखता नहीं है। अथवा इसमें आश्चर्य करने की क्या बात है? वह इतना निकट है इसीलिए उसे वह नहीं देख सकता। जब आँख अपनी पुतली को नहीं देख सकती तो अपने को शक्ति देने वाले परमात्मा को आत्मा कैसे देखे? इसीलिए हे मनुष्य! यदि तू अपने परमात्मा को आँखों से ही देखना चाहता है तो तू उसके काव्य को देख! **गुणों को देखने से ही गुणी देखा जाता है।** तू उसके इस दृश्यमहाकाव्य में उसके दर्शन कर। देख उसका यह दृश्यकाव्य हर समय चल रहा है, खेला जा रहा है। इस दृश्य काव्य का पुस्तक वेद है, पर उसका अभिनय यह सब चलता हुआ दृश्यमान संसार है। मनुष्यकृत नाटक को एक दो बार देख लेने पर वह पुराना हो जाता है और वह समाप्त तो हो ही जाता है, परन्तु यह ईश्वरीय काव्य न तो कभी समाप्त होता है और न कभी पुराना होता है न कभी मरता है और न कभी जीर्ण होता है, क्योंकि इसका रचयिता भी न कभी मरने वाला है और न कभी बुड्ढा होने वाला है। उससे निरन्तर नित्य नया निकलता हुआ वह काव्य सदा चल रहा है। **हे मनुष्य! तू सदा इसको देखता हुआ इसी में अपने परमात्मदेव का हर घड़ी और हर पल दर्शन किया कर।**

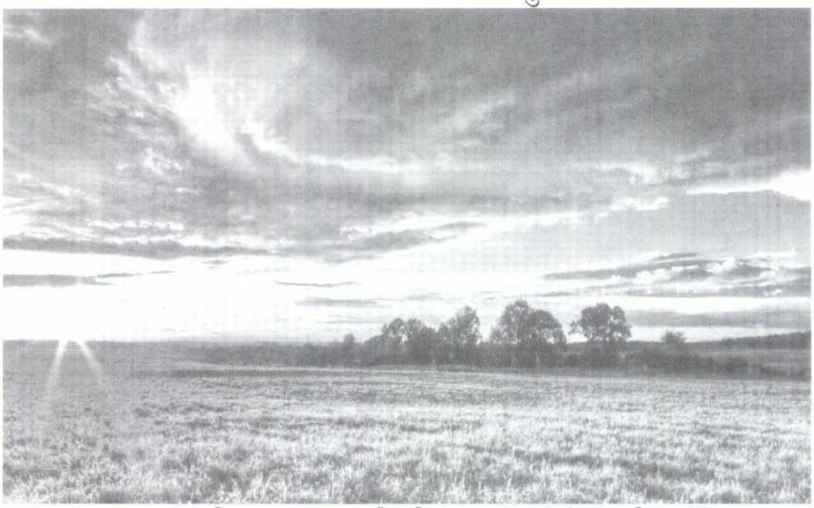

शब्दार्थः- मनुष्य, **अन्तिम सन्तम्**= सदा समीप ही विद्यमान (परमात्मदेव) को, **न जहाति**= कभी त्यागता नहीं, उससे पृथक् नहीं होता और, अन्तिम **सन्तम्**= समीप ही विद्यमान उसे न, **पश्यति**= देखता भी नहीं। हे मनुष्य! **तू देवस्य**= उस परमात्म देव के, **काव्यम्**= काव्य को, **पश्य**= देख, जो काव्य, **न ममार**= कभी मरा नहीं, मरता नहीं और जो, **न जीर्यति**= कभी जीर्ण नहीं होता, पुराना नहीं होता।

लेखक- आचार्य अभयदेव विद्यालंकार
साभार- वैदिक विनय

❑❑❑

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

मुझे उदयपुर आने का मौका लगा। बहुत से दर्शनीय स्थल देखे मानसून पैलेस, सिटी पैलेस आदि पर सबसे बढ़िया सबसे सुन्दर दर्शनीय स्थल नवलखा महल लगा। बहुत सुन्दर व्यवस्थित आर्यावर्त्त की शान आर्य गैलेरी मन प्रसन्न हो गया। सभी को एक बार अवश्य आना चाहिये।

- सुमित टण्डन, लुधियाना

ईश्वर कृपा से आज बड़े सौभाग्य से हमें यहाँ आने का मौका मिला, स्वामी विद्यानन्द जी ने हमें यह बताया कि आप उदयपुर जा रहे हैं तो नवलखा महल हो आना, यह वही जगह है कि जहाँ पर स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश लिखा। फिर मुझसे रहा नहीं गया और ०८ जनवरी २०१७ को सायं ६:४५ को आया और यहाँ के पुरोहित जी से मिला और उन्होंने हमारे जीवन में एक अद्भुत बदलाव किया, उन्होंने हमें बहुत प्यार से आर्यसमाज के वीरों और स्वामी दयानन्द जी के बारे में बताया सुनकर बहुत अच्छा लगा और आनन्द आ गया।

- सुमित आर्य, प्रचार मंत्री, आर्यसमाज, जम्मू कश्मीर

भ्रष्टाचार, कालाधन, नकली मुद्रा, आतंकवाद के नीचे यह देश कराह रहा है। नेता और राजनीतिक दल सत्ता में आते हैं इन समस्याओं को समूल नष्ट करने का वादा भी करते हैं पर करता कोई नहीं। स्वयं का ईमानदारी में कोई खास विश्वास न होना व ऐसे ही लोगों से घिरे रहना, जिनसे 'फेवर' प्राप्त किया है उनके हितों को हानि न पहुँचने देने की प्राथमिकता आदि आदि के चलते आजादी के बाद से आजतक यह कभी संभव नहीं हुआ। वायदे वायदे ही रह गए। मोदी सरकार जब प्रचंड बहुमत से सत्ता में आयी तब भी ऐसे ही वायदे किये गए पर दो-ढाई वर्ष बीतने पर यही लगा कि अन्य सरकारों की भाँति यह सरकार भी वायदों की ही सरकार है। परन्तु ८ नवम्बर २०१६ को रात्रि ८ बजे मोदी के असल स्वरूप के दर्शन दुनिया को हुए जब उन्होंने घोषणा की कि आज रात १२ बजे से ५०० व १००० रुपये के भारतीय नोट लीगल टेंडर नहीं रहेंगे अर्थात् अमान्य हो जायेंगे। इसके बाद बैंकों में ये नोट ३१ दिसंबर तक जमा कराये जा सकेंगे। पेच यहीं पर था। ईमानदारों को कोई डर नहीं है। उनकी वैध कमाई को वे बेखटके बैंक में जमा करा सकते हैं परन्तु जिन अफसरों, नेताओं, व्यापारियों ने अपार काली कमाई छिपा कर रखी है वे किस प्रकार इसे बैंक में जमा करा पायेंगे क्योंकि पड़ताल करने पर वे इसका कोई हिसाब नहीं दे सकेंगे और इस प्रकार काला धन प्रचलन से बाहर हो रद्दी मात्र हो जाएगा। अनुमानतः ३ लाख करोड़ रुपये का काला धन जो देश में है वह समाप्त हो जाएगा ऐसा सोचा गया, यह निर्णय असाधारण था। जिसे देश को पटरी पर लाने की जिद है चाहे इसमें सत्ता हाथ से निकल जाय, वही ऐसा काम कर सकता है, क्योंकि इस निर्णय से जन सामान्य को भी जो परेशानी होगी उसका सम्भावित प्रतिफल आपके विरुद्ध भी हो सकता है और इस कारण आपके अपने समर्थक भी आपसे दूर हो सकते हैं।

किस किस ने लगाया मोदी की योजना में पलीता

इन सब बातों से मोदी जी अनजान होंगे यह सोचा भी नहीं जा सकता है। जन सामान्य और ईमानदार लोगों को परेशानी से बचाने का एक ही उपाय था कि अमान्य नोटों के बदले उन्हें आसानी से नए नोट बैंक से मिल जायँ, ऐसी व्यवस्था कर दी जाय। परन्तु इतनी मात्रा में (करीब ११-१२ लाख करोड़ रुपये) नोट छापना तथा बैंकों तक पहुँचाना समयसाध्य तो था ही परन्तु यह निश्चित था कि ऐसा कोई बृहद् प्रयास इस इरादे को गोपनीय न रहने देता और सरकार के इरादे की हलकी सी झलक भी सारी योजना को चौपट कर देती। इसी कारण मोदी जी ने असाधारण गोपनीयता को प्राथमिकता दी यहाँ तक कि उनके मंत्रिमंडल के प्रमुख सदस्यों को भी इस योजना की भनक नहीं थी। **जो भी हो मोदी जी ने एक ऐसी रिस्क ले ली जिसे कोई राजनेता कभी लेने को तैयार नहीं होता पर इसी का नाम नरेन्द्र दामोदर दास मोदी है।**

लोगों तक नयी मुद्रा यथाशीघ्र पहुँचे इस ओर सरकार ने यथासंभव प्रयास दिन-रात किए। अधिकतम लोगों तक गुजारे हेतु थोड़ी ही सही कुछ न कुछ राशि पहुँच जाय, इस उद्देश्य से नए नोटों की निकासी सीमा पहले चार हजार प्रतिदिन फिर दो हजार रुपये प्रतिदिन निर्धारित कर दी। आश्चर्य यह है कि हर संभव प्रयत्नोपरांत भी जैसा सोचा गया वैसी राहत नहीं मिल पायी। कारण था कि तू 'डाल-डाल मैं पात-पात' की मानसिकता रखने वाले बेईमान ८ नवम्बर के ८ बजे से ही अपने-अपने जुगाड़ में लग गए। आखिर क्या कारण था कि एक ओर बैंक में अनुमान से ज्यादा राशि जमा हो चुकी थी तो दूसरी ओर जहाँ आम आदमी दो हजार के लिए भी तरस रहा था वहाँ करोड़ों की संख्या में गुलाबी मुद्रा पकड़ी गयी। जिन जन-धन खातों में

कल तक १००-१५० रुपये थे उसमें अचानक ढाई-ढाई लाख रुपये आ गए जिसके कारण सरकार को यह सीमा जन-धन खातों के लिए ५०००० तक करनी पड़ी।

स्पष्ट है कि मोदी जी द्वारा इस अभूतपूर्व कदम की घोषणा करते ही इसे अंगूठा दिखाने के प्रयास अथवा दूसरे शब्दों में कहें तो इस योजना को पलीता लगाने की कारगुजारिया चालू हो गयीं। हमें किसी ने ८ नवम्बर की रात को ही बताया कि उनके एक परिचित ने रात में ही एक परिचित बैंक मैनेजर को १८ लाख बड़े नोट दे दिए और वह बदले में चालू मुद्रा उन्हें दे देगा। वस्तुतः सामान्यतया ईमानदार माने जाने वाले बैंकिंग सेक्टर के ऊपर इस योजना की सफलता का अधिकांश भार था। ऐसा प्रतीत होता है कि परीक्षा की घड़ी में चाहे कुछ प्रतिशत लोगों के ही कारण हो, यह सेक्टर खरा नहीं उतर पाया। जब मध्य प्रदेश में एक नृत्य समारोह में एक नेताजी गुलाबी नोटों की बरसात नृत्यांगना के ऊपर कर रहे थे तो प्रश्न स्वाभाविक है कि ऐसे समय में जब लोग एक-एक नोट के लिए तरस रहे हों वहाँ ढेर सारे नोट बेदर्दी से उड़ा देने के लिए उस नेता को कहाँ से प्राप्त हुए? निकास द्वार तो एक ही है- बैंक।

जहाँ तक इस योजना के राष्ट्रहित में होने का प्रश्न है तो संदेह का कोई अवकाश ही नहीं है। यह सिर्फ काले धन पर प्रहार तक सीमित नहीं है वरन् आतंकियों की फंडिंग भी काले धन द्वारा होने के कारण उसमें बाधा से आतंकवाद पर रोक के प्रभावी कदम के रूप में इसे देखा जाना अनुचित नहीं है। ८ नवम्बर के बाद से घाटी में पत्थर फेंकने की घटना जैसे थम सी गयीं तो दूसरी ओर इस संक्षिप्त समय में ही आतंकियों ने घाटी में चार बार बैंक लूटे, इससे क्या यह अंदाजा लगाना कठिन काम है कि आतंकियों की फंडिंग बंद सी हो गयी है। दूसरी ओर यह भी कोई छिपा तथ्य नहीं है कि पड़ोसी देश ने भारी मात्रा में नकली नोट भारत में झोंक दिए थे। जानकारी यह भी आ रही थी की अरबों की संख्या में और नोट छापे जाकर पड़ोसी देश में तैयार पड़े हैं जिन्हें भारत में खपाने की तैयारी चल रही है। सरकार के नोटबंदी के निर्णय से यह अरबों की जाली मुद्रा एक झटके में कागज के टुकड़े रह गयी। पाकिस्तान के हवाला व्यापारी खनानी की आत्महत्या को इसका प्रमाण बताया जा रहा है।

परन्तु इन सब से अर्थात् राष्ट्रहित से कोई सरोकार न रख बेईमान लोग हर तरीके से इस हितकारी योजना को पलीता लगाने में जुट गए। भारी संख्या में रोजाना पाए गए वाले नए नोट स्पष्ट रूप से करप्ट बैंकिंग सिस्टम की ओर इशारा कर रहे हैं। उदाहरण के लिए कुछ घटनाएँ प्रस्तुत हैं।

इनकम टैक्स अधिकारियों ने तमिलनाडु के वेल्लोर में छापेमारी कर २४ करोड़ रुपये पकड़े और ये सभी २००० के नए नोट में थे। चेन्नई में आयकर विभाग ने आठ जगहों पर छापे मारे थे। इसमें बरामद नकदी और सोना देख आयकर अधिकारियों की आँखें भी चौंधियाँ गईं थीं। टीम ने इस छापेमारी में कुल १०६ करोड़ रुपये बरामद किए थे। इसमें से १७ करोड़ पुरानी करेंसी तो २० करोड़ के नए दो हजार के नोट शामिल थे।

आयकर विभाग ने दो लोगों के परिसर में छापेमारी की। ५ करोड़ रुपये जब्त हुए, जिसमें से अधिकतर नए नोट हैं। दिलचस्प बात यह है कि अभी सरकार को सिस्टम में नए नोट जारी किए हुए कुछ सप्ताह ही हुए थे लेकिन इतनी बड़ी मात्रा में नए नोट का बरामद होना कई सवाल खड़े करता है। दोनों लोग वरिष्ठ नौकरशाह थे।

ओवैसी की पार्टी के एक सदस्य के पास २.५ करोड़ रकम बरामद हुयी जिसमें १ करोड़ नए नोट थे।

जयपुर फायर सेफ्टी आफिसर के यहाँ बरामद रिश्वत में ४० लाख के नए नोट थे तो बैंगलुरु में एक फ्लैट से ३.६० करोड़ रुपए बरामद हुए जिनमें ३.३६ करोड़ का कैश २००० रुपए के नोट में था। कर्नाटक में पीडब्ल्यूडी के दो चीफ इंजीनियरों के यहाँ ३६३ करोड़ से ज्यादा की प्रॉपर्टी का खुलासा हुआ, इसमें ५.८ करोड़ की नई करेंसी भी जब्त हुई।

चेन्नई में शेखर रेड्डी के यहाँ से २५३ करोड़ रुपए की प्रॉपर्टी जब्त हुयी। इसमें २० करोड़ रुपए के नए नोट और २३८ किलो सोना था।

स्पष्ट है कि अगर गैर कानूनी तरीके से यह नए नोट बाहर न जाते तो जन सामान्य को मिलते और उनकी तकलीफें निश्चित कम होतीं।

बैंक में सब कुछ सही नहीं हो रहा यह इंगित करने के लिए एक्सिस बैंक का उदाहरण ही पर्याप्त है। एक्सिस बैंक की चाँदनी

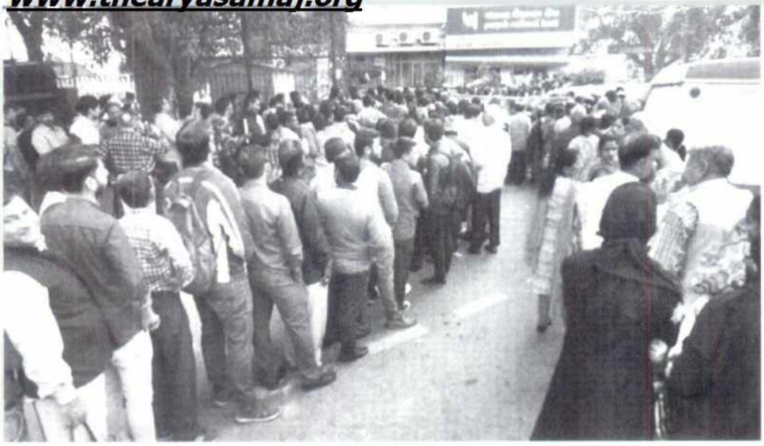

चौक ब्राँच पर आईटी की कार्रवाई में ४४ फर्जी खातों का पता चला। इनमें १०० करोड़ रुपए जमा किए गए हैं। आर.बी.आई. के एक अधिकारी को भी गिरफ्तार किया गया है उसके कब्जे से भी करोड़ो नए नोट बरामद हुए हैं।

प्रभावशाली लोग और राजनेता भी इस योजना को पलीता दिखाने में पीछे नहीं रहे। कुछ न्यूज चैनल्स द्वारा किये गए स्टिंग ऑपरेशन चौंका देने वाले थे। कौनसी ऐसी पार्टी है जिसके नेता ३० से ४० प्रतिशत कमीशन लेकर पुरानी करेंसी को नयी में बदलने का दावा करते नहीं मिले। १० करोड़ की राशि तक भी बदलने को ये तैयार थे बशर्ते उन्हें अपना कमीशन मिल जाय। कुछ चेक देने की बात कर रहे थे तो कुछ नए नोट। कुछ तो हाथ की हाथ नए नोट देने को तैयार थे। इनके पास नए नोट कहाँ से आये या कहाँ से आने वाले थे? स्टिंग बता रहे थे कि कुछ सी.ए. भी अपना हाथ साफ करने को तैयार थे।

ऐसे में अति प्रभावशाली लोगों का तो क्या कहना। केवल एक उदाहरण-

आयकर विभाग ने तकरीबन १० करोड़ रुपये की नकदी और ज्वैलरी को नागालैंड के दीमापुर से जब्त किया। मनी लांड्रिंग के इस केस में राज्य के एक प्रभावशाली नेता के बेटे की संलिप्तता का मामला सामने आया। गौरतलब है कि सूचना के आधार पर दीमापुर एयरपोर्ट पर सिक्योरिटी अधिकारियों ने एक प्राइवेट एयरक्राफ्ट से ४.६ करोड़ रुपये बरामद किए थे। समाचार पत्रों के अनुसार इस प्राइवेट जेट में नगालैंड के पूर्व मुख्यमंत्री नेफियो रियो के दामाद अनातो झिमोमी सवार थे। अनातो के पिता झिमोमी राज्य विधानसभा के सदस्य रह चुके हैं।

सूत्रों के मुताबिक झिमोमी ने स्वीकार किया कि दिल्ली के एक बिजनेसमैन से उन्हें यह राशि मिली थी और वह इसे दीमापुर में अपने अकाउंट में जमा कराने जा रहे थे। नागालैंड के स्थानीय कानून के मुताबिक यदि वह साबित कर देते कि यह राज्य में आय से प्राप्त हुई है तो उनको टैक्स से छूट मिल जाती।

कर्नाटक के एक नेता व हवाला व्यापारी के.वी. वीरेन्द्र के यहाँ से ५.७ करोड़ के नए नोट बरामद हुए। देखिये यह हाल प्रभावशाली लोगों का है।

सर्राफा व्यापारियों ने भी कसर नहीं छोड़ी। उदयपुर के एक सर्राफा व्यापारी ने ८ नवम्बर को रात ३ बजे तक अपना प्रतिष्ठान खोल नोट बंदी की खबर सुनकर भाग कर आते लोगों को सोना बेचा। पुणे के एक ज्वेलर ने ६० करोड़ रुपये बैंक में जमा कराए। यह सेल उसने नवम्बर प्रथम सप्ताह में दिखायी। ७५% ग्राहकों का कोई Identification तक नहीं था। कहते हैं कि सोना इन दिनों ४० से ५० हजार रुपये प्रति १० ग्राम बिका। तो इस प्रकार हर बेईमान व्यक्ति इस योजना को पलीता लगाने में लगा था। पर इन दिनों रोजाना छापे और इनमें उजागर संपत्ति बयान कर रहे थे कि मोदी जी का इरादा कुछ और है सरकार ने स्पष्ट कर दिया था कि बैंक में जिन्होंने भी अप्रत्याशित रूप से धन जमा कराया है सबकी जाँच होगी। अस्तु।

यहाँ एक बात और संकेतित करना चाहेंगे कि प्रायः अर्थशास्त्रियों का कथन है काला धन नकद मुद्रा के रूप में तो अत्यल्प रहता है वस्तुतः तो इसका निवेश प्रॉपर्टी तथा सोना, जवाहरात आदि में होता है। अतएव यदि कालेधन के विरुद्ध युद्ध को अंतिम पायदान तक ले जाना है तो जैसा कि सोशल मीडिया पर ई-प्रॉपर्टी पासबुक जैसी योजना विस्तृत रूप से आ रही है वैसी ही किसी योजना को लगे हाथ मोदी जी को लागू करना होगा क्योंकि अभी जन सामान्य मोदी जी के इरादों को सफल होते देखना चाहता है। अतः कठिन कदम उठाने का यही माहौल है। यहाँ हम यह लिख दें कि यदि मोदी ने असाधारण कार्य किया है तो उससे भी अधिक चमत्कृत कर देने वाला कार्य भारत की जनता ने किया है। जन-सामान्य के दुःख तकलीफ का अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता परन्तु कहीं एक भी घटना अराजकता की नहीं होना (जिसका सम्पूर्ण विपक्ष बेसब्री से इन्तजार कर रहा था) यह रेखांकित करता है कि भ्रष्टाचार से त्रस्त्र आमजन को पहली बार सचमुच लगा कि इतिहास में प्रथम बार भ्रष्टाचार पर अंकुश लगने की सुखद अनहोनी होने जा रही है। परन्तु राजनीतिज्ञों के लिए यह मानसिकता दोधारी तलवार है। जब तक जनता को विश्वास रहेगा कि यह युद्ध हर आम और खास भ्रष्टाचारी के विरुद्ध है वह और भी तकलीफ सहने को तैयार है दूसरी ओर यदि उसने अपने को ठगा महसूस किया, उसे तनिक भी लगा कि खास तो विभिन्न कानूनों अथवा दलीलों

की आड़ में बच निकले हैं और सारे दुःख उसके हिस्से में आये हैं तो उसे बागी बनने में भी देर नहीं लगेगी।

अतः एक भी दागदार नहीं बचना चाहिए और यहीं पर लाख रुपये का प्रश्न जो हर खासो-आम के जेहन में मचल रहा है सर उठाता है। मोदी जी को ध्यान होना ही चाहिए वह यह कि राजनीतिक पार्टियों को मिलने वाले धन का क्या होगा। अगर मोदी जी इस पर अंकुश लगा सके, बी.जे.पी सहित सभी राजनीतिक दलों को कम से कम ८ नवम्बर के बाद लिए चंदे की एक-एक पाई को पूर्ण पारदर्शिता से दिखाने हेतु बाध्य कर सके तो आगे बीस वर्ष देश मोदी जी को सर आँखों पर उठाकर चलेगा और अगर इसमें किसी भी प्रकार के घालमेल का अहसास हुआ तो २०१९ में ही कहीं मोदी युग का अंत न हो जाय।

यू.पी. तथा पंजाब में चुनाव आने वाले हैं। यदि बी.जे.पी यह सिद्ध कर पायी कि उसने चुनाव में बेतहाशा खर्च किये जाने वाले काले धन की परिपाटी से स्वयं को अलग रखा है तो आप देखिएगा विजयश्री उनका वरण करेगी। और यदि काले धन से ७० सालों से पोषित भ्रष्ट तंत्र के चलते हार भी मिले तो वह हार, जीत से ज्यादा गरिमामय होगी। परन्तु भ्रष्टाचार, काले धन से राजनीतिक दलों को मुक्त करने की शुरुआत मोदी जी को बी.जे.पी.से ही करनी होगी। ऐसा होगा जनता इस पर विश्वास करना चाहती है केवल मोदी जी के व्यक्तित्व के कारण। उसके इस विश्वास में एक भी डेंट बी.जे.पी को जमीन पर भी लाकर पटक सकता है। (कुछ समय पूर्व गोरखपुर में बी.जे.पी द्वारा एक करोड़ रुपयों की मोटर साइकिल खरीदने का समाचार इस कारण दब गया था कि बताया गया कि इसका भुगतान चेक द्वारा किया गया था) अतः हमारे विचार से मोदी जी के पास पीछे लौटने का कोई रास्ता नहीं है, और वे ऐसा चाहते भी नहीं ऐसा हमें विश्वास है।

अंत में एक बार पुनः अर्थशास्त्रियों की राय कि कालाधन निर्माण को रोकने का साधन अंततोगत्वा डिजिटल ट्रांजेक्शन ही है। प्रसन्नता है कि मोदी जी कि ठीक यही सोच है। ८ नवम्बर के बाद का उनका प्रत्येक वक्तव्य इसी दिशा में है। बल्कि जन-धन खातों से ही इसकी शुरूआत हो चुकी थी। आज कोई भी आलोचना कर सकता है कि भारत जैसे देश में जहाँ आज गावों में बैंक तक नहीं है वहाँ डिजिटलाइजेशन की बात दिवास्वप्न है। हम कहेंगे कि जहाँ चाह है वहाँ राह है। आखिर करोड़ों की संख्या में जन-धन खाते खुल सकेंगे यह किसी ने सोचा था क्या? गत एक महीने में ही डिजिटल प्रकार से विनिमय कई गुना

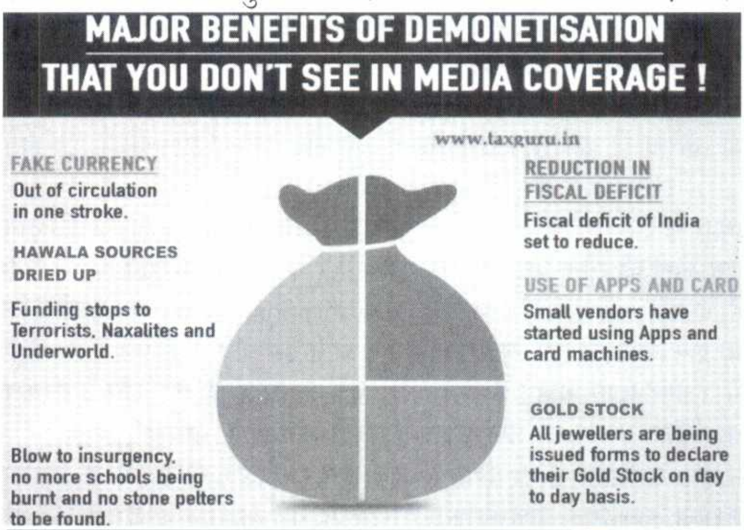

बढ़ चुका है। सभी वित्तीय संस्थान अपने साधन लेकर आ रहे हैं। जो कभी नहीं हुआ वह कभी नहीं होगा यह कोई नियम नहीं है। कहने को लोग यह भी कहते थे कि भारत की आजादी संभव नहीं थी। तो अगर प्रयास सही दिशा में हैं तो सफलता निश्चित मिलेगी। सबसे बड़ी बात है कि प्रधान मंत्री जी के प्रयासों के साथ आज पूरा देश नयी सुबह की आस लिए जिस प्रकार खड़ा है वह अभूतपूर्व है अतः यही समग्र क्रान्ति हेतु सही समय है।

- अशोक आर्य

चलभाष- ०९३१४२३५१०१

□□□

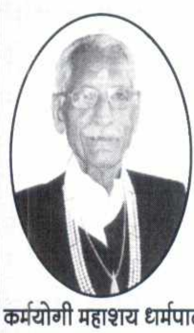
कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

आशाएँ आकार लें,
बढ़े जगत् में मान।
नए साल में यही कामना,
पूरे हों सारे अरमान।।
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

www.thearyasamaj.org

मनमोहन कुमार आर्य

'महर्षि दयानन्द सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग के आदर्श उदाहरण'

महर्षि दयानन्द ने अपनी शिक्षा वा विद्या पूरी होने पर वेद व सत्य मान्यताओं व परम्पराओं का प्रचार किया और इसके लिए अन्धविश्वासों, पाखण्ड, फलित ज्योतिष सहित सभी प्रकार की अविद्या व मिथ्या मान्यताओं का खण्डन किया। इसकी प्रेरणा उन्हें अपने विद्या गुरु प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द, मथुरा से मिली थी। महर्षि दयानन्द देश भर में घूम कर अविद्या का नाश करने और विद्या की उन्नति करने हेतु वेदों का प्रचार क ते थे। वह बंगाल पहुँचे तो वहाँ उन्हें ब्रह्म समाज के नेता श्री केशव चन्द्र सेन ने अपने उपदेशों और व्याख्यानों में संस्कृत के स्थान पर आर्यभाषा हिन्दी को अपनाने की प्रेरणा की। महर्षि दयानन्द इन दिनों वस्त्र धारण न कर कौपीन मात्र धारण करते थे। श्री केशव चन्द्र सेन ने स्वामी जी को वस्त्र धारण करने का सुझाव दिया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। यद्यपि उन्हें वस्त्र धारण करने की इच्छा व आवश्यकता नहीं थी परन्तु उन्हें भ्रमण करते हुए स्त्री-पुरुषों से युक्त मनुष्य-समुदाय के सम्पर्क में आना पड़ता था। सम्भव था कि यदा-कदा वा अनजाने में कोई महिला भी उनसे वार्तालाप, अध्ययन करने व व्याख्यान सुनने आ सकतीं थी। अतः मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए उन्होंने ब्रह्म नेता सेन महाशय का यह सुझाव भी तत्काल स्वीकार कर लिया।

समय व्यतीत होता रहा। महर्षि दयानन्द काशी में प्रचार कर रहे थे। वहाँ डिपूटी कलेक्टर राजा जयकृष्ण दास आपके भक्त, अनुयायी व सहयोगी बन गये। आपने स्वामी जी को सुझाव दिया कि आपके श्रीमुख से उत्तम प्रवचन व व्याख्यान प्रस्तुत किये जाते हैं। आपके विचारों वा प्रवचनों से वही लोग लाभान्वित होते व हो सकते हैं जो कि सभा में उपस्थित होते हैं। जो लोग लाभान्वित होना चाहें परन्तु किन्हीं कारणों से वहाँ आ न सकें, उन्हें आपके विचारों को जानने का लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। कालान्तर में जब आप नहीं रहेंगे तब भी आपके विचार, मान्यताओं व वैदिक सिद्धान्तों से समकालिक व आने वाली सन्ततियाँ वंचित रहेंगी। यदि आप अपने विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों का एक विस्तृत ग्रन्थ लिख दें तो इन सभी समस्याओं का निदान हो जायेगा। महर्षि दयानन्द इस उत्तम प्रस्ताव को सुनकर प्रसन्न हुए और उसे उन्होंने तत्काल स्वीकार कर लिया। अनुमान है कि उसके तीन माह के अन्दर ही सन् १८७४ में आदिम सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ तैयार कर दिया। यह सत्यार्थप्रकाश का प्रथम संस्करण था। आपने कुछ समय पहले ही आर्यभाषा हिन्दी सीखना आरम्भ किया था अतः भाषा के परिमार्जन की आवश्यकता थी। स्वामी जी ने जिन लेखकों को बोलकर यह ग्रन्थ लिखाया था, वह पौराणिक विचारों के थे। अतः पौराणिक मनोवृत्ति के कारण उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के इस प्रथम संस्करण में आपके आशय के विपरीत कुछ वचन डाल दिये थे, जिनका सुधार वा परिमार्जन अपेक्षित था। अतः ऋषि दयानन्द ने मृत्यु से पूर्व सन् १८८३ में सत्यार्थप्रकाश का संशोधित संस्करण तैयार कर दिया जो उनकी मृत्यु के समय मुद्रणाधीन था। ३० अक्टूबर १८८३ को स्वामी की मृत्यु हो जाने पर यह ग्रन्थ रत्न सन् १८८४ में प्रकाशित हुआ। अतः सत्यार्थप्रकाश जैसे ग्रन्थ के लेखन की प्रेरणा भी उन्हें अपने भक्त व प्रशंसक राजा जयकृष्ण दास, मुरादाबाद से वाराणसी में मिली थी जिसे उन्होंने सहर्ष व सधन्यवाद स्वीकार किया था। आर्यसमाज की स्थापना की प्रेरणा व प्रस्ताव महर्षि दयानन्द जी को मुम्बई में उनके अनेक भक्तों से मिला था। महर्षि दयानन्द

को यह प्रस्ताव पसन्द आया था परन्तु उन्होंने वहाँ के लोगों को सावधान कर दिया था कि यदि आप आर्यसमाज के संचालन में सतर्क व सावधान नहीं रहे तो आगे चलकर गड़बड़ घोटाला हो सकता है। महर्षि दयानन्द ने मुम्बई में १० अप्रैल, १८७५ को आर्यसमाज की स्थापना कर दी और उसके बाद आर्यसमाज ने अनेक अभूतपूर्व कार्य भी किये। उनके आरम्भ किये गये कार्य आज भी जारी हैं, परन्तु आर्यसमाज का जो स्वरूप होना था वह आज देखने को नहीं मिल रहा है। आज आर्यसमाजों में वह व्यवस्थायें देखने को नहीं मिलतीं जिन्हें हम आदर्श व्यवस्थायें कहते हैं जबकि अन्य अनेक संस्थाएँ हमसे कहीं आगे चल रहीं हैं। ऐसी स्थिति में अन्य क्या सोचते हैं, यह जानना तो कठिन है परन्तु आर्यसमाज के सदस्य व ऋषि भक्त भी आर्यसमाज व इसकी सभाओं के क्रियाकलापों से पूर्णतया सन्तुष्ट नहीं अपितु दुःखी अवश्य हैं। लोकैषणा, स्वार्थ और पदलोलुपता के आन्तरिक शत्रुओं ने आर्यसमाज को भारी हानि

पहुँचाई है और स्थिति वर्तमान में भी दुर्भाग्यपूर्ण है। इससे लगता है कि ऋषि की आर्यसमाज की स्थापना के अवसर पर दी गई चेतावनी सत्य सिद्ध हो रही है। यहाँ हमारा उद्देश्य यह बताना था कि आर्यसमाज की स्थापना भी ऋषि ने अपने सच्चे भक्तों के आग्रह पर उनके सहयोग से की थी।

सत्यार्थप्रकाश की रचना के बाद महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित यजुर्वेद एवं ऋग्वेदभाष्य (सातवें मण्डल के अनेक सूक्तों तक), संस्कार विधि, आर्याभिविनय व अनेक लघु ग्रन्थों की रचना की। यह लेखन कार्य इनके महत्व व आवश्यकता को देखकर कुछ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्व-विवेक से सम्पन्न किये गये। इसके लिए महर्षि स्वयं सावधान थे अतः इसके लिए उन्हें किसी व्यक्ति विशेष का कोई ऐसा प्रस्ताव नहीं मिला जैसा कि सत्यार्थप्रकाश के लेखन के लिए मिला था।

महर्षि दयानन्द जी का एक मुख्य कार्य अपने सर्वस्व की

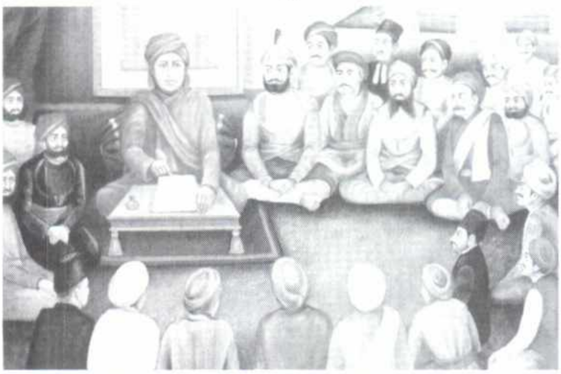

उत्तराधिकारिणी सभा, परोपकारिणी सभा, की स्थापना का था। इसे महर्षि दयानन्द ने अपनी मृत्यु से कुछ समय पूर्व उदयपुर में सम्पन्न किया था। यह उनकी अपनी मृत्यु विषयक निजी अनुभूतियों का परिणाम था। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें यह आभास हो गया था कि वह जो वेद प्रचार और अन्य मतों की मिथ्या मान्यताओं व अन्धविश्वासों की समीक्षा एवं खण्डन-मण्डन करते हैं, उसका उनके अपने जीवन के प्रति घातक परिणाम हो सकता है। ऐसी स्थिति में किसी प्रकार का कोई विवाद न हो और उनके बाद भी उनके द्वारा स्थापित वा आरम्भ वेद प्रचार का कार्य सुचारु रूप से चलता रहे, इस पर विचार कर ही उन्होंने परोपकारिणी सभा की स्थापना की थी। स्वामी जी की मृत्यु वा महाप्रस्थान अजमेर में होने के कारण इस सभा का मुख्यालय वहीं बनाया गया जो आज भी सक्रिय है। यह कार्य भी उन्होंने स्वविवेक से किया।

महर्षि दयानन्द जी अपने वैदिक सिद्धान्तों व विचारों के पक्के थे। यदि उनका कोई भक्त व अनुयायी उनके हित का कोई प्रस्ताव करता था जिससे उनके जीवन को हानि होने की आशंका होती थी तो वह अपने अनुयायियों द्वारा किसी स्थान विशेष की यात्रा न करने के सुझाव को स्वीकार नहीं करते थे। ऐसा ही जोधपुर में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए जाते समय हुआ था। उनके भक्त शाहपुरा रियासत के आर्य नरेश नाहरसिंह जी व अन्य कुछ भक्तों को स्वामी जी के जोधपुर जाने पर उनके जीवन को हानि होने की आशंका थी। उन्होंने स्वामी जी को यात्रा न करने वा वहाँ के लोगों से सावधान रहने व प्रचार में संयम बरतने का सुझाव दिया था। स्वामी जी ने यात्रा न करने का सुझाव स्वीकार नहीं किया और अपने अनुयायियों को कहा कि **'यदि लोग उनकी उँगलियों को बत्तियों की तरह जला भी दें तो भी वह सत्य को प्रकट करने से न चूकेंगे।'** जोधपुर प्रवास में जिस बात की आशंका थी वही हुआ। जोधपुर में उन्हें विष दिया गया जिसके परिणामस्वरूप वह रुग्ण हो गये। उनके उपचार में भी अनियमिततायें हुईं। एक ऐसे चिकित्सक अलीमर्दान ने उनका उपचार किया जो अनुमानतः उनके प्रति द्वेष रखता था। स्वामी जी को विष दिये जाने के पीछे किसी बड़े राजनीतिक षड्यन्त्र के होने की संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता। इसका कारण था कि वह देश की आजादी के समर्थक थे। उन्होंने अपने सत्यार्थप्रकाश व आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों में विदेशी सरकार के विरोध में विचार प्रकट किये थे। वह जोधपुर महाराजा की वैश्यावृत्ति आदि अन्य मिथ्याचार के भी घोर आलोचक थे और उसका कठोर शब्दों में खण्डन करते थे। अतः उनके जीवन को नष्ट करने के किसी बड़े षड्यन्त्र की सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता। जो भी हो, जोधपुर में उन्हें विष दिया गया, उपचार में गड़बड़ी हुई जिसके कारण ३० अक्टूबर, सन् १८८३ को अजमेर में दीपावली के दिन उन्होंने अपनी इच्छा से ईश्वरोपासना करते हुए प्राणायामपूर्वक श्वास छोड़ दिया और ब्रह्मलोक वा मोक्ष को प्राप्त हो गये।

स्वामी दयानन्द जी उच्च कोटि के योगी और महाभारत के बाद वेदों के असाधारण व अपूर्व विद्वान् थे। उनका जीवन सत्य के ग्रहण करने का सर्वोत्तम उदाहरण है। उन्होंने उन्हें दिये जाने वाले किसी अच्छे प्रस्ताव की उपेक्षा नहीं की अपितु उन्हें स्वीकार कर सत्य के ग्रहण का प्रेरणाप्रद उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका स्थापित किया आर्यसमाज अपनी आरम्भिक व उसके कुछ वर्षों बाद के यश व कीर्ति को अक्षुण्ण नहीं रख पा रहा है। ईश्वर कृपा करे कि महर्षि दयानन्द का स्थापित किया आर्यसमाज देश व संसार की आदर्श संस्था बन सके और उनके स्वप्न साकार हों। इसके लिए ऋषि के जीवन से प्रेरणा लेकर निजी लोकैषणा व स्वार्थों का त्याग करना होगा जो असम्भव तो नहीं परन्तु कठिन अवश्य है।

-१९६ चुक्खूवाला-२
देहरादून (उत्तराखण्ड)

www.thearyasamaj.org

हिंसा का अल्पीकरण करने का संघर्ष भी अपने आप में अहिंसा है।

हिंसा को कम से कमतर (अल्पीकरण) करने का पुरुषार्थ स्वयं में अहिंसा है। साथ ही यह अहिंसा के मार्ग पर दृढ़ कदमों से आगे बढ़ने का उपाय भी है अथवा यूँ कहिए कि अल्पीकरण का निरन्तर संघर्ष ही अहिंसा के सोपान हैं। जब सूक्ष्म हिंसा अपरिहार्य हो, द्वेष व क्रूर भावों से बचते हुए, न्यूनता का विवेक रखना, अहिंसक मनोवृत्ति है। यह प्रकृति-पर्यावरण नियमों के अनुकूल है। बुद्धि, विवेक और सजगता से अपनी आवश्यकताओं को संयत व सीमित रखना अहिंसक वृत्ति की साधना है।

"जीवन जीने में पूर्ण आदर्श अहिंसा असम्भव है। कुछ बाह्याचारों को अपनाने पर भी कोई यह दावा नहीं कर सकता कि वह पूर्णरूपेण हिंसा से बचा हुआ है। अतः आदर्श यही है कि जितना ज्यादा हो सके हिंसा का अल्पीकरण किया जाय। यही प्रेरणा प्रस्तुत आलेख में है। - सम्पादक"

अहिंसा में विवेक के लिये दार्शनिकों ने तीन आयाम प्रस्तुत किए हैं। **पहला आयाम है संख्या के आधार पर**, जैसे ५ की जगह १० जीवों की हिंसा दुगुनी हिंसा हुई। **दूसरा आयाम है जीव की विकास श्रेणी के आधार पर** एक इन्द्रिय, दो इन्द्रिय विकास क्रम के जीवों से क्रमशः तीन, चार अधिक विकसित हैं और पाँच इन्द्रिय जीव पूर्ण विकसित। यह विवेकजन्य व्यवहार,

विज्ञान सम्मत और नैतिक अवधारणा से पुष्ट तथ्य है। अतः हिंसा की श्रेणी भी उसी क्रम से निर्धारित होगी। **तीसरा आयाम है, हिंस्र भाव के आधार पर**। प्रायः अनजाने से लेकर जानते हुए, स्वार्थवश से लेकर क्रूरतापूर्वक तक आदि मनोवृत्ति व भावनाओं की कई श्रेणी होती है। प्रथम दृष्टि हिंसा पर सोचना होगा कि उसकी भावना करुणा की है, अथवा परमार्थ की? स्वार्थ की है या अहंपोषण की? निरर्थक उपक्रम है या उद्देश्यपूर्ण?

इसे एक उदाहरण से समझते हैं- एक लुटेरा घर लूटने के प्रयोजन से, घर के बाहर सुस्ताने बैठे, किसी अन्य व्यक्ति को खतरा मान हत्या कर देता है। दूसरा, एक कार चालक, जिसकी असावधानी से राहगीर उस गाड़ी के नीचे आ जाता है। तीसरा, एक डॉक्टर, जिसके ऑपरेशन टेबल पर जान बचाने के भरसक प्रयास के बाद भी मरीज दम तोड़ देता है। तीनो किस्सों में मौत तो होती है, पर भावनाएँ अलग-अलग हैं। इसलिए दोष भी उन भावों की श्रेणी के अनुसार होना चाहिए। प्रायः न्यायालय में भी, हत्या के आरोपी की स्वबचाव, सहज स्वार्थ और क्रूर घिनौनी मनोवृत्ति के आधार पर सजा निर्धारित होती है।

मनोवृत्ति आधारित जैन दर्शन में 'लेश्या' का एक अभिन्न दृष्टान्त है। छः पदयात्री जा रहे थे। जोर की भूख लगी थी। रास्ते में एक जामुन का पेड़ दिखाई दिया। एक यात्री बोला- 'अभी इस पेड़ को जड़ से काट कर सभी का पेट भर देता हूँ। इस पर दूसरा बोला- 'जड़ से काटने की जरूरत नहीं, शाखा को काट देता हूँ धराशायी होगी तो सभी फल पा लेंगे। तीसरा व्यक्ति एक टहनी तो चौथा फलों के गुच्छे को ही पर्याप्त होने की बात करता है। पाँचवा मात्र गुच्छे से फल चुनने की वकालत करता है तो छठा कहता है पक कर जमीन पर बिखरे पड़े जामुनों से ही हमारा पेट भर सकता है। यह मानव मन की मनोवृत्तियों का, क्रूरतम से शुभतम भाव निश्चित करने का एक श्रेष्ठ और दुर्लभ उदाहरण है।

अतः हिंसा और अहिंसा को उसके संकल्प, समग्र सम्यक् दृष्टिकोण, सापेक्ष निर्भर और परिणाम के सर्वांगीण परिपेक्ष्य से ग्रहण करना आवश्यक है।

- साभार- निरामय

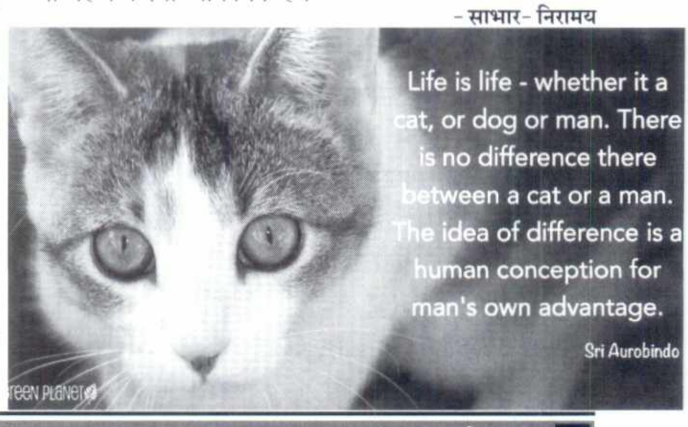

www.thearyasamaj.org

धर्म क्या? और धर्म की आवश्यकता क्यों?

जीवन की सफलता सत्यता में है। सत्यता का नाम धर्म है। जीवन की सफलता के लिए अत्यन्त सावधान होकर प्रत्येक कर्म करना पड़ता है, यथा - मैं क्या देखूँ, क्या न देखूँ, क्या सुनूँ, क्या न सुनूँ, क्या जानूँ, क्या न जानूँ, क्या करूँ अथवा क्या न करूँ। क्योंकि मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है, जब मनुष्य किसी भी पदार्थ को देखता है तब उसके मन में उस पदार्थ के प्रति भाव या विचार उत्पन्न होते हैं। क्योंकि यही मनुष्य होने का लक्षण है। इसीलिए निरुक्तकार यास्क ने मनुष्य का निर्वचन करते हुए लिखा है कि

'मनुष्यः कस्मात् मत्वा कर्माणि सीव्यति' - ३/७/१

अर्थात् मनुष्य तभी मनुष्य है जब वह किसी भी कर्म को चिन्तन तथा मनन पूर्वक करता है। यही मनन की प्रवृत्ति मनुष्यता की परिचायक है अन्यथा मनुष्य भी उस पशु के समान ही है जो केवल देखता है और बिना चिन्तन मनन के विषय में प्रवृत्त हो जाता है।

मनुष्य जब किसी पदार्थ को देखकर कार्य की ओर अग्रसर होता है तब चिन्तन उसको घेर लेता है, ऐसे समय में धर्म बताता है कि आपको किस दिशा में कार्य करना है, यही धर्म की आवश्यकता है। यदि धर्म जीवन में होगा तब जाकर श्रेष्ठ कर्म को कर सकेंगे अथवा पदार्थ का यथायोग्य व्यवहार (कर्म) कर सकेंगे।

काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, मद और मोह ये मानव जीवन में मनःस्थिति को दूषित करने वाले हैं। ये षड्रिपु मनुष्य की उन्नति में सर्वाधिक बाधक होते हैं इनका नाश मनुष्य धर्मरूपी अस्त्र से कर सकता है। इन विध्वंसमूलक प्रवृत्तियों को जीतना ही जितेन्द्रियता तथा शूरवीरता कहलाता है। यदि व्यक्ति के अन्दर धर्म नहीं है तो वह इनके वशीभूत होकर स्वयं अपने तथा सामाजिक पतन का कारण बन जाता है। इन पतनोन्मुखी प्रवृत्तियों को रोकने के लिए परमावश्यक होता है कि व्यक्ति विवेकशील हो और विवेकशील होने के लिए आवश्यक है अच्छे सद् चरित्रवान् मित्रों का संग करें तथा अच्छे ग्रन्थों का स्वाध्याय करें।

आज हमारी युवा पीढ़ी धर्म के अभाव में पतन की ओर अग्रसरित होती चली जा रही है, ऐसे में लोगों की चिन्तन क्षमता समाप्त हो गयी है। नित्य नये-नये मानवता के ह्रास के कृत्य दिखायी देते हैं, ऐसा क्यों है? क्या हमने कभी विचार व चिन्तन किया है? आज हमारी सोचने की क्षमता इतनी कम क्यों हो गयी है, कि हम धर्म को समझ ही नहीं पा रहे हैं। हम धर्म को एकमात्र कर्मकाण्ड का रूप स्वीकार करते हैं। आज हमें धर्म को स्वयं के अन्दर धारण करना होगा। धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध इन दश प्रमुख कर्तव्यों को स्वयं के लिए धारण करने का नाम धर्म बताया है।

धर्म की परिभाषा करने वाले विभिन्न आचार्यों के अपने-अपने मत हैं। संसार में मतवालों ने अपने-अपने धर्म के नाम पर विभिन्न चिह्न बना लिए हैं, जैसे- कोई केश बढ़ा रहा है, कोई लम्बी दाढ़ी बढ़ाये हुए है, कोई केश व दाढ़ी दोनों ही बढ़ाये हुए है, कोई पाँच शिखाएँ रखे हुए है, कोई मूछ कटाकर दाढ़ी बढ़ा रहा है, कोई चन्दन का तिलक लगाए हुए है, कोई माथे पर अनेक रेखाओं को अंकित किये हुए है और न जाने धर्म के नाम पर क्या-क्या करते हैं। किन्तु ये सभी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं क्योंकि कहा भी है- **'न लिंग धर्मकारणं'** अर्थात् धर्म का कारण कोई चिह्न विशेष नहीं होता है।

यदि हम धर्म को जानना चाहते हैं तो हमें धर्मशास्त्र की इस पंक्ति को समझना होगा-

'धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः'

जो व्यक्ति धर्म को जानना चाहता है, उसे वेद को प्रमुखता के साथ जानना होगा। धर्म धारण करने का नाम है इसी लिए कहते हैं-

'धारणाद् धर्म इत्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः'।

जो किसी भी कार्य को करने में सत्य-असत्य का निर्णय कराये, चिन्तन व मनन कराये उसे धर्म कहते हैं। हम धर्म को धारण करते हैं तथा उसको व्यवहार रूप में प्रस्तुत करते हैं।

धर्म ज्ञान के लिए वेद ज्ञान की अत्यन्त आवश्यकता है,

www.thearyasamaj.org

क्योंकि वेद ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है और ईश्वर के सर्वज्ञ होने से उसके ज्ञान में भ्रान्ति अथवा अधूरेपन का लेशमात्र भी निशान नहीं है। वेदज्ञान सृष्टि के आदि का है तथा सभी का मूल है, अतः हम मूल को छोड़ पत्तों अथवा टहनियों को समझने में अपना समय व्यर्थ न करें।

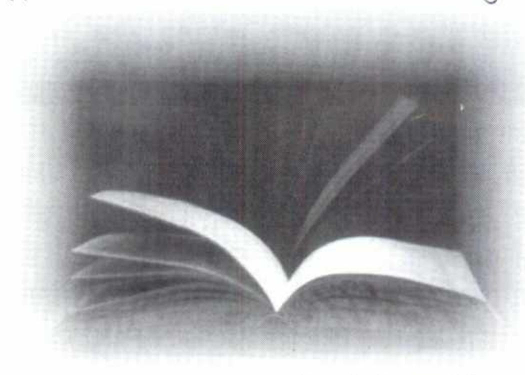

इसीलिए धर्म का ज्ञान और उस पर आचरण मनुष्य के लिए परमावश्यक है, यह हमारी उन्नति व सुख का आधार है। मनुष्य के परम लक्ष्य पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि में परमसहायक है।

वेद मनुष्य को आदेश देता है **'मा मृत्योरुदगा वशं'**। मनुष्य को प्रतिक्षण सर्तक रहकर अपने चारों ओर फैले मृत्यु के भयंकर पाशों से बचने का प्रयास करना चाहिए।

उपनिषद् का ऋषि प्रार्थना करता है-**'मृत्योर्माऽमृतं गमय'** हे प्रभो! मुझे इन मृत्युपाशों से बचाकर अमरता का पथिक बनाइए। इसी रहस्य को स्पष्ट करने के लिए ही धर्मशास्त्रकार घोषणा करता है- **धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः**। अर्थात् जो व्यक्ति धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है और जो धर्म को नष्ट करता है, धर्म उसको नष्ट कर देता है। जीवन में हताशा और किंकर्त्तव्यविमूढ़ता धार्मिक पक्ष के निर्बल होने पर ही आती है। जीवन में अधर्म की वृद्धि ही व्यक्ति को निराश तथा दुर्बल बना देती है अतः धर्म की वृद्धि करके व्यक्ति को सबल व सशक्त रहना चाहिये जिससे अधर्म के कारण क्षीणता न आ सके। धर्म से परस्पर प्रीति व सहानुभूति के भावों की वृद्धि होती है।

"धर्म की वृद्धि करके व्यक्ति को सबल व सशक्त रहना चाहिये जिससे अधर्म के कारण क्षीणता न आ सके। धर्म से परस्पर प्रीति व सहानुभूति के भावों की वृद्धि होती है।"

आचार्य चाणक्य ने लिखा है-

सुखस्य मूलं धर्मः धर्मस्य मूलमिन्द्रियजयः।

अर्थात् **सुख का मूल धर्म है और धर्म का मूल-इन्द्रियों को संयम में रखना है**। संसार में प्रत्येक मनुष्य की इच्छा होती है कि मैं सुखी रहूँ और सुख की प्राप्ति धर्म के बिना नहीं हो सकती। अतः धर्म का आचरण अवश्य ही करना चाहिये। बिना धर्म को अपनाये कोई भी मनुष्य सुखी नहीं हो सकता। संसार की कोई भी वस्तु सुख का हेतु हो सकती है परन्तु मरणोत्तर किसी के साथ नहीं जा सकती। शास्त्रकार कहते हैं- **'धर्म एकोऽनुगच्छति'** अर्थात् एक धर्म ही मरणोत्तर मनुष्य के साथ जाता है। संस्कृत के नीतिकार कहते हैं-

धनानि भूमौ, पशवश्च गोष्टे, नारी गृहे बान्धवाः श्मशाने।
देहश्चितायां परलोकमार्गे, धर्मानुगो गच्छति जीव एकः ।।

अर्थात् समस्त भौतिक धन भूमि में ही गड़ा रह जाता है अथवा आजकल बैंकों में या तिजोरियों में ही धरा रह जाता है और गाय आदि पशु गोशाला में ही बंधे रह जाते हैं। पत्नी घर के द्वार तक ही साथ जाती है और परिवार के भाई-बन्धु व मित्रजन श्मशान तक ही साथ देते हैं। एक मनुष्य का शुभाशुभ कर्म या धर्म ही परलोक में मनुष्य का साथ देता है अर्थात् धर्म के अनुसार ही मनुष्य को परलोक में अच्छी-बुरी योनियों में जाना पड़ता है।

हमे धर्म को यथार्थ में जानकर व्यवहार रूप में स्वयं के लिए धारण करने की आवश्यकता है। धर्म ही एकमात्र हमारा अस्त्र तथा शस्त्र है, जिसका प्रयोग कर हम इहलोक तथा पारलौकिक यात्रा को पूर्ण करें। आओं! हम सब मिलकर धर्म को धारण करें।

- शिवदेव आर्य
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून
मो.-8810005096

❑❑❑

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्या 'प्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ २० पर देखें।

सत्य सखा महर्षि दयानन्द सरस्वती

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म ऐसा प्रतीत होता है संसार में सत्य की स्थापना के लिए ही हुआ था। सारे ऐतिहासिक ग्रन्थों को पढ़ जाइये, अनेकों महापुरुषों के जीवनों को पढ़ जाइये, चाहे वे किसी देश व जाति में उत्पन्न हुये हों लेकिन स्वामी दयानन्द जैसा सत्याग्रही पुरुष मिलना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव है। हमारे कहने का तात्पर्य यह बिल्कुल नहीं है कि सभी महापुरुषों ने सत्य के बारे में कुछ नहीं कहा, सभी महापुरुषों ने अपने जीवन में सत्य की महत्ता पर प्रकाश अवश्य डाला है। पर स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसा सत्य के प्रति समर्पित व्यक्ति मिलना दुर्लभ है। बाल्यकाल से ही वे सत्य के अन्वेषी रहे। अपने पूज्य पिता के विरुद्ध भी वे सत्य के कारण खड़े हो गये। जब उनके पिता ने शिवरात्रि का व्रत रखने के लिए उनसे कहा और शिव की महिमा का वर्णन किया जिसको सुनकर उन्होंने व्रत रखने का निश्चय कर लिया। लेकिन रात्रि में शिव की मूर्ति पर चढ़कर चूहे को मलमूत्र करते और प्रसाद खाते देखा तो उन्होंने अपने पिता को जगाकर शिवजी के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिया और अपने पिता से स्पष्ट कह दिया कि सच्चा शिव यह नहीं है इस पत्थर की मूर्ति को शंकर भगवान कहना सत्य नहीं है। तथा सच्चे शिव की खोज करने का वहीं से निश्चय कर लिया। गृहत्याग के बाद सत्य की खोज के लिये उन्होंने अथक प्रयास किया। उनकी यह दृढ़ धारणा थी कि समस्त संसार का कल्याण एक सत्य के कारण ही हो सकता है, अन्य कोई रास्ता नहीं है। संसार के बीच सत्य के पथ को अनेक प्रकार के मत-मतान्तर रूपी झाड़-झंकार ने ढक लिया था। ऐसी विषम परिस्थिति में सत्य के गीत गाना तो बड़ा सरल था पर सत्य का पथ खोजना दुरुह कार्य था। क्योंकि संसार में जितने भी उस समय पथ प्रदर्शक लोग थे वे स्वयं सत्य का नाम लेकर भी सत्यपथ से भ्रष्ट थे। उसका कारण उन सबका सत् साहित्य से अनभिज्ञ होना था।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बड़े प्रयास से पाखण्डों मत-मतान्तरों जालग्रन्थों के बीच से आखिर सत्य का मार्ग खोज ही लिया। और संसार को उस सुगम पथ पर चलाने के लिये सत्य के पथ में आई बाधाओं को दूर करने का अविस्मरणीय कार्य किया। उनके मानस में सत्य की महत्ता कितनी गहराई से बैठी हुई थी यह उनके द्वारा लिखित साहित्य और स्थापित संगठन की नियमावली से पता चलता है। सत्य के प्रचार-प्रसार के लिये स्थापित आर्य समाज के प्रथम पाँच नियमों में उन्होंने सत्य को ही प्रधानता दी है।

उनके द्वारा रचित कालजयी ग्रन्थ का नाम ही सत्यार्थप्रकाश है। इसी ग्रन्थ की भूमिका में वे लिखते हैं कि 'मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है। अर्थात् जो सत्य है, उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।' इन वाक्यों में महर्षि ने सत्य के स्वरूप को जिस सरलता और निश्चलता से रखा है यह उनकी प्रबल सत्यनिष्ठा का परिचायक है। इससे आगे सत्य से पतित व्यक्ति की मानसिक अवस्था का प्रकाश करते हुये लिखते हैं कि- 'जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिये वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता।'

संसार में व्यक्ति दुखों को दूर करने के लिये और आनन्द की प्राप्ति करने के लिये अनेक प्रकार की योजनायें बनाता है और उन योजनाओं को साकार करने के लिये अनेक प्रयत्न करता है। लेकिन हम संसार में देखते हैं आनन्द प्राप्ति के सारे प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं। हमारी सारी साधना किसी काम नहीं आती है। चाहे हम आनन्द की प्राप्ति के लिये भौतिक संसाधनों का कितना ही संग्रह करलें या आध्यात्मिकता के नाम पर कितना ही ढोल पीट लें। आनन्द के नाम पर हाथ कुछ नहीं लगता है। अन्त में व्यथित होकर व्यक्ति कह उठता है कि संसार में सब कुछ व्यर्थ है। सब छलावा है। नाना प्रकार से व्यक्ति सुख-शांति, आनन्द के नाम पर ठगा जाता है। ऐसी स्थिति से सामान्य जनों को निकालने के लिये विद्वानों को अपना दायित्व निर्वहन करना चाहिये। लेकिन विद्वान् स्वयं ही नहीं समझ पाता कि अशान्ति की आग में जलते हुए संसार को आखिर किस तरह बचाया जाये। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अनुभवों के आधार पर बताया है कि 'विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।' महर्षि के इन स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य शब्दों ने मानो आनन्द प्राप्ति का सुगम पथ सबके लिये खोल दिया है। जो भी विद्वान् या अल्पज्ञ इस बात को स्वीकार कर जीवन में अपनायेगा तब उसे पछता करके कभी भी यह कहना नहीं पड़ेगा कि संसार छलावा है। सब कुछ दुखमय है।

सत्य पथ का अवलम्बन करने वाला शान्ति को निश्चित रूप से प्राप्त करता ही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती का मानना है कि सत्य के जानने के लिए परमपिता परमात्मा हमारे अन्दर व्यापक होकर पथ प्रदर्शक बना रहता है। क्योंकि वह प्राणीमात्र का हितैषी है और ये हित बिना सत्य के नहीं हो सकता। सत्य का यथार्थ प्रकाश परमात्मा प्रत्येक आत्मा में बड़ी सरलता से अविरल भाव से करता है। इस बात को सत्यान्वेषी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बड़ी प्रबलता से कहा है कि 'मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।'

महर्षि दयानन्द का सदा ही मानना था कि व्यक्ति समाज या राष्ट्र चाहे कितना ही सम्पन्न क्यों न हो, चाहे कैसी भी योजनायें बना ली जायें, चाहे जैसी शिक्षा के लिये उत्तम व्यवस्थायें कर ली जायें, भौतिक सुविधा के कितने भी साधन जुटा लिये जायें लेकिन वह उन्नति जिसको प्राप्त कर समस्त संसार आनन्दमग्न हो जाये वह इन साधनों से नहीं हो सकती। फिर किस प्रकार हो सकती है? इसका उपाय बताते हुये वे सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखते हैं कि- 'जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्याऽसत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें। क्योंकि, सत्योपदेश के विना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।' सत्य पथ पर चलते हुए कभी-कभी अनेक कठिनाइयों को देख करके व्यक्ति घबरा जाता है। ऐसे व्यक्ति को अपने अनुभवों से आश्वस्त करते हुये महर्षि लिखते हैं कि- 'सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है, इस दृढ़ निश्चय के आलम्बन से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन हो कर कभी सत्यार्थ प्रकाश करने से नहीं हटते।'

इस प्रकार से हम देखते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एक वीर योद्धा की तरह आजीवन सत्य की स्थापना के लिये

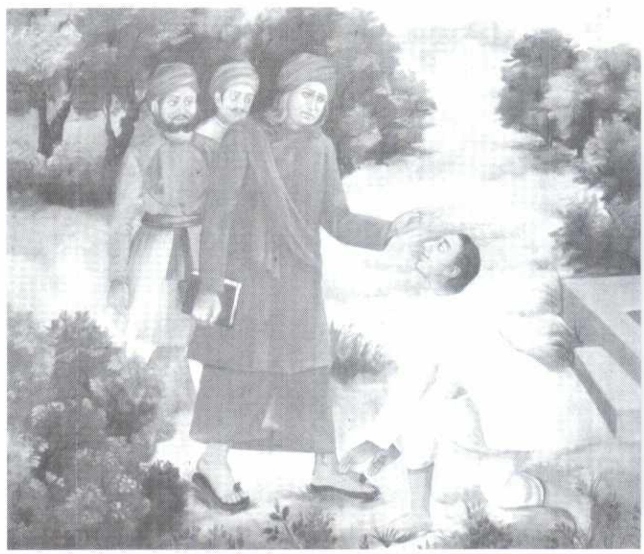

विकट संघर्ष किया। असत्य की घोर अंधियारी में अपना जीवन दीप जलाकर चहुँ ओर सत्य का प्रकाश किया। इनकी इस तपस्या के परिणामस्वरूप अनेकों आर्यसमाजों, गुरुकुलों, विद्यालयों के द्वारा करोड़ों व्यक्तियों को सत्य पथ मिला। अनेकों पतित आत्माओं ने पतन के गहरे गर्त से निकलकर अपने जीवन को धन्य किया। इसी पथ पर चलते हुये संसार का कल्याण करते अपने महान् जीवन का उत्सर्ग कर दिया।

www.thearyasamaj.org

'मर रहा जीव जी रहा शरीर है'

परमात्मा ने मनुष्य को अपनी श्रेष्ठ सन्तान, पुत्र-प्रतिनिधि के रूप में पृथिवी पर भेजा है। मनुष्य से अत्यन्त सूक्ष्म अथवा विशाल असंख्य प्राणी हैं। उनके समस्त क्रिया-कलाप आहार, आराम, आरक्षा, और अनुप्रजनन तक सीमित हैं। उन्हें मरना पसन्द हो सकता है किन्तु इन चार-आचार में कोई बाधा पसन्द नहीं होती है। मनुष्य ही ऐसा है जिसके लिये परमेश प्रभु कहते हैं-

'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्' - ऋ. १०.५३.६

अर्थात् केवल आकार प्रकार से ही नहीं, मननपूर्वक आचरण से भी तुम्हें मनुष्य बने रहना है, तथा दिव्य सन्तान-प्रजा को भी बढ़ाते रहना है। यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो वास्तव में वह जीवात्मा रूप में तो मर ही जाता है, भले उसका शरीर जीवित बना रहता है। परीक्षण एवं घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य के किसी अबोध बालक को पशु उठा ले गये, उसे मारा नहीं बचा रहने दिया, तो वह बड़ा होकर चाल-ढाल, खान-पान से मनुष्य बिल्कुल नहीं रहा, कथित पशु की प्रवृत्तिधारी बन गया। समझो उसकी मानवीयता मर गयी, शरीर जीता रह गया।

राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त का निष्कर्ष यहाँ पर उल्लेखनीय है- **'वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे'** पर वह मरे कैसे? जब उसकी मनुर्भव- आत्मा ही मर गयी, तो शरीर ही बचा रहा है, इसका मानवीयता शून्य शरीर पशुता का परिचायक बन कर रह गया।

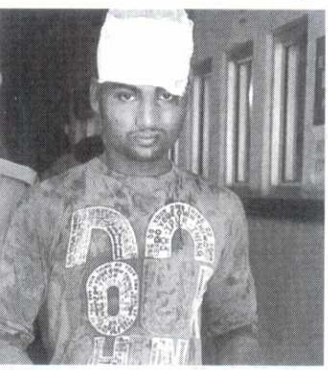

दैनिक हिन्दुस्तान का 'दीपावली २०१६' अंक मेरे सामने है। इसके प्रधान सम्पादक मान्य शशिशेखर ने आज मानवीयता की आँखे खोलकर उसके ज्योतिर्मय चरित्र पर छा गयी कालिमा को लालिमा में बदलने का प्रयास किया है। एक महिला गुरुग्राम स्थित घर से काम पर जाने के लिये निकलती है। वह मेट्रो पकड़ने के लिए स्टेशन के अन्दर घुसती है। चारो और दर्जनों लोग, सीसीटीवी कैमरों की चप्पे-चप्पे पर निगाह, आस-पास केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की टोली। ऐसे सुरक्षित वातावरण में वह महिला आगे बढ़ती है, किन्तु तभी एक सिरफिरा उस पर चाकू से हमला कर देता है। महिला छटपटाती, मदद के लिये गुहार लगाती है, पर सब व्यर्थ। सिरफिरा तब तक उस पर प्रहार करता रहा, जब तक कि वह दम नहीं तोड़ देती। हत्यारा वही आटोरिक्शा चालक है, जिसको वह घर से स्टेशन तक आने-जाने का किराया देती थी। इसी दौरान बात-चीत, जान-पहचान से वह महिला से एक पक्षीय प्यार में अन्धा हो गया। पूर्वोत्तर के किसी सुदूर गाँव से आकर छोटी-मोटी नौकरी से जिन्दगी बसर करने वाली उस महिला के घर वाले क्या कभी सोच सकते थे कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में उसके साथ ऐसा होगा?

उन्होंने दूसरी हृदय विदारक घटना बिहार के मुजफ्फरपुर की बताई। यहाँ कुछ लोगों ने राज्य सरकार में जूनियर इंजीनियर पद पर कार्यरत सरिता कुमारी को उसके ही घर के सामने स्थित मकान में कुर्सी से बाँधकर जिन्दा जला दिया। पुलिस को उसकी राख व जली हुई हड्डियाँ ही मिलीं। सरिता की माँ ने बड़ी कठिनाई से चप्पलों के आधार पर

पहचान की कि दरिंदगी की शिकार उसकी अपनी बेटी है। दुर्दान्त घटनाओं से स्पष्ट होता है कि हमारी महिलाओं, बच्चों व असहाय लोगों के लिये घनी आबादी या बाजार भी हिंसक पशुओं से भरे जंगल से कम खतरनाक नहीं हैं। सोचनीय है कि ऐसे दुःखद क्षण हों, सड़क पर हो रही दुर्घटनायें हो, वहाँ उपस्थित जन पीड़ित की सहायता करना तो दूर, अपने मोबाइल के कैमरे से वीडिओ बनाने में मग्न हो जाते हैं। सहायता की कौन कहे- अनेक बार तो राह चलते लोग भुक्तभोगी व्यक्ति के मूल्यवान पदार्थ उठाकर चलते बनते हैं। सामान्यजन की बात ही क्या कहना, इस कुकृत्य को करने में वे भी पीछे नहीं रहते हैं, जिन्हें राज्य शासन जन सहायता के लिए स्थायी रूप से वेतन देकर नियुक्त करती है। इस प्रकार के अवांछित व्यवहार से आपको नहीं लगता कि मानवीय तत्व निष्प्राण हो रहा है,

www.thearyasamaj.org

और पाशविक शारीरिक भोग लीला जीवन्त हो रही है?

दैनिक हिन्दुस्तान के इसी अंक के पृष्ठ १० पर प्रकाशित एक समाचार मानवता का मान बढ़ाने को काफी है। मजदूर की बहादुरी से तीन बदमाश पकड़े गये। नई दिल्ली अमन विहार क्षेत्र में एक युवती से छेड़छाड़ कर रहे तीन युवकों को न केवल उसने रोका बल्कि उनसे भिड़ गया। पकड़े जाने के डर से तीनों बदमाश वहाँ से भाग खड़े हुये। युवक श्रमिक ने उनकी मोटर साईकिल का नम्बर नोट कर पुलिस को दे दिया, जिससे वे तीनों आरोपी पकड़े गये। आजादपुर सब्जी मण्डी में काम करने वाले उस साहसी युवक को पुलिस ने सम्मानित करने का निश्चय किया है। यह माना जा सकता है कि अस्त्र-शस्त्रधारी बदमाश एक अकेले को शिकार बना सकते हैं तो मिलकर तो जोर लगाया

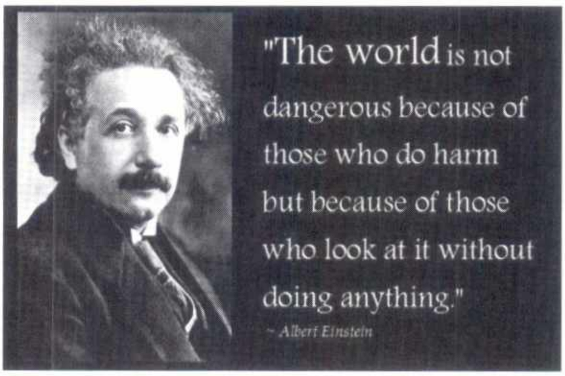

ही जा सकता है। मोबाइल निकाल कर वीडिओ के फेर में न पड़कर उपस्थित सभी जन यदि हुंकार करेंगे तो बदमाश उल्टे पाँव दौड़ते मिलेंगे। इसके लिए उन्हें अपने अन्दर छिपी पशुता को पछाड़कर मानवता को जागृत करना पड़ेगा। बहु प्रचलित स्वर्णिम त्रयवाक्य-सार को मनुष्य पलटने लगा है। धन सब कुछ है, वह अवश्य आये, स्वास्थ्य रहे या जाये। चरित्र किस चिड़िया का नाम, वह उड़ गयी तो भी क्या? धन-धान्य-राज्य की चकाचौंध में उसे कौन निहारता है? पर इतिहास छोड़ता भी नहीं, वज्र वाक्य में घोषणा कर बैठता है-

"३१ दिसम्बर २०१६, वर्ष की अन्तिम रात्रि, बैंगलूर में महिलाओं के साथ जिस पैमाने पर बदसलूकी की गई वह रूह को कँपा देने वाली घटना तो है ही, लेखक द्वारा इस आलेख के शीर्षक की पुष्टि भी करती है। यह सभी के लिए गम्भीर चिन्त्य विषय है।" - सम्पादक

एक लख पूत सवा लख नाती,
ता रावण घर दिया न बाती।

वेदमाता की चेतावनी सुनेगा, मानेगा वही बचेगा भी, जँचेगा भी।

उत्क्रामातः पुरुष भाव पत्या मृत्योः पड्बीशमवमुञ्चमानः।
मा च्छित्था अस्माल्लोकादग्नेः सूर्यस्य सन्दृशः।। - अथर्व. ८/१/४

अर्थात्- 'हे मनुष्य! तू इस अवस्था से ऊपर उठ, नीचे मत गिर। मृत्यु की बेडी को खोलता हुआ, इस लोक में अग्नि (सद्ज्ञान) एवं सूर्य (तेजोमय उत्थान) के सन्दर्शन से मत पृथक् हो।' जो नहीं देख पायेगा वही **उलूकयातुं** (अथर्व. ८/४/२२) उल्लू कहलायेगा। यदि तुझे उलोक नहीं सुलोक बनना है तो-

दोषो गाय बृहद्गाय द्युमद्धेह्याथर्वण।
स्तुहि देवं सवितारम्।। - अथर्व. ६/१/१

अर्थात् 'हे निश्चल-स्थिर ज्ञान-गमन-प्राप्ति को चाहने वाले कर्मशील पुरुष! तू सविता देव की स्तुति कर, प्रभात को तो गाता ही है, तू रात को भी उसका गानकर, खूब गा, उस ज्ञानवान, द्युतिमान को धारण कर, उसकी आज्ञा का पालन कर।' इसके लिए तुझे कुछ नया नहीं करना है, बस अनुकरण करना है। वह कैसे, जैसे वेदमाता बताये। '**नृभिर्येमाणो हर्यतो विचक्षणो राजा देवः समुद्र्यः।।**- साम. ८५८ अर्थात् पूर्व जन्मा माता-पिता-आचार्य योगियों के द्वारा बतलाये गये यम-नियम का पालन करते हुए तू उनका प्रेमपात्र बन, इससे तू बुद्धिमान बनेगा, राज्यैश्वर्यवान देव स्वरूप बनकर प्रजाजन का ही नहीं परमेश प्रभु की प्राप्ति का अधिकारी बन जायेगा।

गाँव से चलकर रामनाथ महानगर में अपने बाल सखा सोमनाथ से मिलने आये। अपने सखा की समृद्धि के साथ-साथ उनके महानगर व्यापी सम्मान को देखकर रामनाथ चकित रह गये। उन्होंने प्रश्न किया 'भाई जी! यह सब-कुछ आपने कैसे पा लिया? बात आई गई हो गई। ग्राम सखा की रोज नई-नई माँग होती थी- अपने महानगर के दर्शनीय स्थल दिखाओ। वह उन्हें दिखाते रहे। वापसी से एक दिन पूर्व उनकी अभिलाषा हुई, जो अबतक न देखा हो वह दिखाइये। घूमते-घामते वह सखा को लेकर कब्रिस्तान पहुँच गये। सखा ने विस्मयपूर्वक कहा- 'आप यहाँ कहाँ ले आये? आप जानते नहीं, यहाँ आने के लिये लोग मरते हैं।' वास्तव में वह यही दर्शनीय स्थल है। मेरे धनवान एवं सम्मान के समन्वय सूचक आपके गहनतम प्रश्न का यही उत्तर भी है श्रीमान्।

'आया है सो जायगा, राजा रंक फकीर।
कोई सिंहासन चढ़ चले, कोई बँधे जंजीर।।
हजारो महफिले होंगी, हजारों कारवा होंगे।
जमाना हमको ढूँढेगा, न जाने हम कहाँ होंगे।।
सब ठाठ पड़ा रह जायेगा, जब कूँच करेगा बंजारा।।'

- देवनारायण भारद्वाज
'वरेण्यम' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़

□□□

www.thearyasamaj.org

इतिहास के झरोखों से

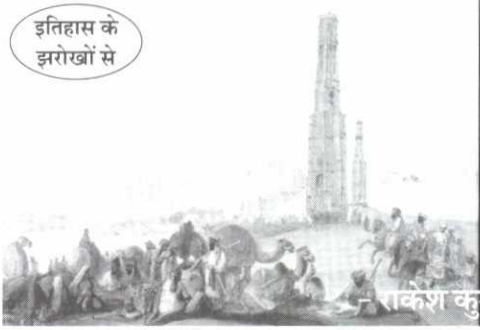

मोहम्मद गोरी को हराने वाली रानी नायका और राजा भीमदेव

- राकेश कुमार आर्य

शहिद रहीम अपनी पुस्तक 'संस्कृति और संक्रमण' के पृष्ठ २४३ पर लिखते हैं- '१०२६ ई. से ११७४ ई. तक की डेढ़ शताब्दी में कोई आक्रमण (भारत पर) नहीं हुआ। लेकिन संक्रमण के राजनीतिक प्रभाव से स्थिति इतनी दुरुह हो गयी कि सम्पूर्ण भौगोलिक क्षमता को आधार बनाकर कोई केन्द्रीय सत्ता स्थापित न हो सकी। धरती के शहरनुमा टुकड़ों वाले कई रजवाड़े और सरदार उभर आए। उत्तर भारत में तोमर (दिल्ली), चौहान (अजमेर), राठौर (कन्नौज), चन्देल (बुंदेलखण्ड), पाल (बिहार), सेन (बंगाल), चालुक्य (गुजरात), शिशोदिया (मेवाड़) आदि की राजपूत रियासतें थीं। दक्षिण में चोल, चेरे, पल्लव और पाण्डेय कबीलों की छोटी-छोटी हुकूमतें थीं। उत्तर और दक्षिण के ये रजवाड़े आपस में ही लड़ते रहने के आदी हो गये थे।'

शाहिद जी ने भारत की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति का यह बहुत सुन्दर वर्णन किया है। यद्यपि चक्रवर्ती सम्राट बनने के लिए राजाओं का परस्पर युद्धरत् रहना उचित माना गया है, परन्तु इसकी भी अपनी सीमाएँ हैं। जब राजाओं के पारस्परिक युद्धों से जनता का विनाश होने लगे या जनता एक दूसरे राज्य की जनता को परस्पर ईर्ष्या भाव से देखने लगे तो उस समय समझना चाहिए कि ऐसे युद्धों से हमारा नैतिक और राजनैतिक पतन हो रहा है। ऐसे ईर्ष्याभाव से हम अपना बहुत कुछ खो चुके थे। परन्तु यहाँ खोने की दुष्ट परम्परा का उल्लेख करना हमारा उद्देश्य नहीं है, **यहाँ जानबूझकर विलुप्त किये गये इतिहास के कुछ गौरवपूर्ण रत्नों को प्रकाशित करना हमारा उद्देश्य है।**

गुजरात की भूमि ने भी हमें ऐसे कई रत्न दिये हैं जिनके दिव्य तेज से इतिहास आज तक जगमगा रहा है। गुजरात के चालुक्यों को कई इतिहासकारों ने गुर्जर वंश का माना है। गुजरात को प्राचीन काल में गुर्जरत्रा अर्थात् गुर्जरों के अधिकार वाला क्षेत्र कहा जाता था। कुक्क नामक एक गुर्जरवंशीय शासक के विक्रम संवत् ६१८ के लेख में चालुक्यों को गुर्जर कहा गया है। जैसे गुर्जर शासक भीम चालुक्य भीमदेव प्रथम और उसके पुत्र गुर्जर शासक कर्ण चालुक्य, मल्ल और महाराजाधिराज चालुक्य कुमार पाल को गुर्जरवंश से जोड़ा गया है। इसी प्रकार अन्य लेखों में जयसिंह चालुक्य को गुर्जर मण्डल का शासक कहा गया है। उसकी राजधानी अनहिल पट्टन (अन्हिलवाड़ा) कही गयी है। इस पट्टन शब्द से ही पट्टिका या पट्टी शब्द प्रचलित हुआ जो आजकल भी गुर्जरों के बहुत से गाँवों में किसी मोहल्ले विशेष के लिए बोला जाता है। इसी प्रकार खेतों के बड़े समूह को आज तक भी पाट कहने का प्रचलन गुर्जरों में है। ये सब बातें गुर्जरों में अपने बीते हुए साम्राज्य के स्वर्णिम काल को किसी न किसी रूप में स्मृति में बनाये रखने की ही प्रवृत्ति का परिचायक है। यद्यपि आजकल यह सब परम्परा में ही परिवर्तित होकर रह गया है, क्योंकि अनहिल पट्टन भी अनहिल पट्टन नहीं रही है, अपितु अन्हिलवाड़ा हो गयी है।

गुजरात के चालुक्य ही सोलंकी कहे जाते हैं। मोहम्मद गोरी के समय अन्हिल पट्टन पर अल्पवयस्क मूलराज नामक शासक का शासन था। मूलराज की माता रानी नायका अपने अल्पवयस्क पुत्र की संरक्षिका के रूप में यहाँ शासन कर रही थीं। रानी नायका बहुत ही कुशल नीतिनिपुण और कूटनीतिज्ञा थीं। उन्हें नारी समझकर ही गौरी ने अन्हिलवाड़ा पर ११७५ ई. में आक्रमण कर दिया।

रानी के समक्ष अपने स्वर्गीय राजा के पश्चात् परीक्षा की विकट घड़ी आ उपस्थित हुई। वह अपने पति, अपनी प्रजा और अपने देश के प्रति अपने कर्तव्य भाव से भर उठीं। रानी विदेशी आततायी आक्रांता को धूल चटाने की योजना बनाने लगी। उस समय गुजरात का प्रमुख सोलंकी भीमदेव था। उसने रानी नायका की सहायता के लिए अपनी सेवाएँ दीं और स्वयं ही नहीं अपितु कई राजाओं को लेकर वह विदेशी शासक के विरुद्ध युद्ध के मैदान में आ डटा। इतना

ही नहीं रानी नायका ने भी अपनी एक अनोखी योजना पर कार्य किया। वह अपनी पीठ पर अपने अल्पवयस्क राजकुमार को बाँधकर लायी और युद्ध के मैदान में चण्डी बनकर कूद पड़ी। **इस घटना का उल्लेख वीर सावरकर जी ने अपनी पुस्तक 'भारतीय इतिहास के छह स्वर्णिम पृष्ठ' में इस प्रकार किया है-**

'गुजरात के मुख्य राजा की मृत्यु हो जाने से वहाँ की रानी और सैनिक अधिकारियों ने मृत राजा के बहुत ही छोटे बच्चे को उस राज्य पर बिठा दिया था। इसलिए मोहम्मद को वह राज्य दुर्बल दिखाई पड़ा और उसने उस पर चढ़ाई कर दी। किन्तु आपाततः दीखने वाली इस दुर्बल परिस्थिति ने मोहम्मद के छक्के छुड़ा दिये। मोहम्मद की चढ़ाई होते देख गुजरात की हिन्दू सेना स्वयं आगे बढ़कर आबू पहाड़ के आस-पास तक आ धमकी। कहना न होगा कि उनसे सहानुभूति रखने वाले कुछ हिन्दू राजाओं ने भी उसे इस पहल में पूरी सहायता की। रानी ने वहाँ बड़ी शूरता के साथ सामना किया। वह अपने लाडले नन्हे राजा को हिन्दू सेना के सामने ले आयी और इन शब्दों में उन सबका आह्वान किया कि **'यह बाल राजा आप लोगों की गोद में डाल रही हूँ। प्राणप्रण से इसकी रक्षा कीजिए।'** तत्काल आग भड़क उठी और वह सारी हिन्दू सेना और आस-पास के सहायक हिन्दू नरेश भी मोहम्मद के साथ इतने आवेश से लड़े कि मार से मात खाकर उसकी सारी सेना दशों दिशाओं में भाग निकली। **बड़े कष्ट से मोहम्मद गौरी प्राण बचाकर जो भागा तो अपने अधीन सीमा प्रदेश में ही जाकर रुका।'**

भारतीय नरेशों ने यहाँ एक साथ कई प्राचीन भारतीय राजनीतिक मूल्यों का परिचय दिया। इनमें प्रथम था- नारी का सम्मान करना। दूसरा था- विदेशी शत्रु के समक्ष हमारे मतभेद कुछ नहीं, हम उसके लिए सब एक हैं। तीसरा था- अदम्य साहस और देशभक्ति। चौथा था- अपने समकक्ष से यदि उसके जीवन काल में कुछ मतभेद भी रहे हों तो उसके स्वर्गवासी होने पर उसकी संतान से कोई वैर विरोध न रखने का। **इन सारे गुणों का सम्मिलन हुआ तो विदेशी आक्रान्ता पूँछ दबाकर युद्ध क्षेत्र से भाग खड़ा हुआ।**

पी. एन. ओक ने अपनी पुस्तक 'भारत में मुस्लिम सुल्तान' भाग-१ के पृष्ठ ९५ पर इस युद्ध में संलिप्त रहे भीमदेव द्वितीय के विषय में लिखा है कि इस हिन्दू राजा ने बड़े ओज और उत्साह से पीट-पीटकर गौरी के दुष्ट दल की केवल पीठ ही नहीं तोड़ी, अपितु भारत की सीमा के बाहर तक उसे खदेड़-खदेड़ कर मारा। **इस मार से गौरी इतना भयभीत हो गया था कि आगामी २० वर्षों तक गुजरात पर बुरी नजर डालने का उसका साहस भंग हो गया।'**

इतिहास के इस स्वर्णिम पृष्ठ को जान-बूझकर उपेक्षित किया गया है। रानी नायका की अवतार १८५७ की क्रान्ति के समय रानी लक्ष्मीबाई बनी थीं जिन्होंने अपने अल्पवयस्क पुत्र को पीठ पर बाँधकर युद्ध किया था। रानी लक्ष्मीबाई दुर्भाग्यवश अपने राज्य की रक्षा नहीं कर पायीं, यह एक अलग बात है। परन्तु उन्होंने रानी नायका का अनुकरण कर अपने अद्भुत राजनीतिक और रणनीतिक कौशल का परिचय तो दिया ही था। आवश्यकता दोनों रानियों के भारत की स्वतंत्रता में दिये गये योगदान को महिमामंडित करने की है। जब-जब कभी मतभेदों के उपरान्त भी एक राजा के विदेशी शत्रु के लिए अपने दूसरे स्वदेशी राजा को दिये गये सहयोग को मैं इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर देखता हूँ तो सुब्रह्मण्यम भारती की ये पंक्तियाँ अनायास ही स्मरण हो आती हैं, मानो कवि ने ऐसे महान् देशभक्त राजाओं का कीर्तिगान किया हो-

एक माँ की कोख से ही जन्मे हम।
अरे विदेशियों ! हम अभिन्न हैं।
मनमुटाव वो क्या होता है ? हम भाई-भाई ही रहेंगे।।
हम वंदेमातरम् कहेंगे।
हजारों जातियों का यह देश,
सम्बल न माँगेगा तुमसे ....
अरे विदेशियों हम अभिन्न हैं।
एक माँ की कोख से जन्मे हम ....
हम वंदेमातरम् कहेंगे।'
माँ भारती ने बाँधे रखा सबको।।

वास्तव में भारत माता के प्रति समर्पण की यह उत्कृष्ट

www.thearyasamaj.org

भावना हमें सदियों से एकता के सूत्र में बाँधे रही है। हमने इस पावन भूमि को कभी भी एक भूमि का टुकड़ा नहीं माना, अपितु इसे माता समझा और स्वयं को इसका पुत्र माना। इसलिए अभी तक के इतिहास में (अर्थात् ११७५ ई. तक) एकाध अपवाद को छोड़कर अधिकांश अवसरों पर देशी राजाओं ने अपने साथी राजा का सहयोग किया और विदेशी आततायी को मार भगाने में सफलता प्राप्त की। हाँ, अब से आगे ऐसी परिस्थितियाँ अवश्य बनीं कि जब देशी राजाओं में से किसी ने विदेशी आक्रान्ताओं को अपने देशी शासक के विरुद्ध भड़काया या उस पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया। उनकी यह कार्यशैली निश्चय ही निंदनीय रही और यह निंदनीय कार्यशैली ही भारत जैसे स्वतंत्रता प्रेमी देश के कुछ भूभाग को पराधीन करा गई।

जिस भीमदेव की बात हम यहाँ कर रहे हैं, उसी के भतीजे प्रताप सिंह व उसके अन्य भाईयों से भीमदेव का मनमुटाव हो गया, तो ये लोग गुजरात से रुष्ट होकर पृथ्वीराज चौहान के पास शरणागत के रूप में आ गये।

पृथ्वीराज के पिता सोमेश्वर उस समय जीवित थे। परन्तु

राजकाज में पृथ्वीराज चौहान हाथ बँटाने लगे थे। एक दिन की बात है कि प्रताप सिंह दरबार में बैठे अपनी मूँछों पर ताव दे रहे थे, जिसे पृथ्वीराज के दरबारी कान्ह ने देख लिया। उसे प्रताप सिंह का यह कार्य चौहानों को अपमानित करने वाला लगा और उसने अविवेकपूर्ण ढंग से प्रताप सिंह का दरबार में ही वध कर दिया। पृथ्वीराज चौहान को भी कान्ह का यह कृत्य न्याय, नीति और राजनीति के विरुद्ध लगा, पर अब किया भी क्या जा सकता था? प्रताप सिंह के साथ आये अन्य सोलंकियों ने जब चौहान के दरबार की यह घटना भीमदेव को जाकर बतायी तो वह आग-बबूला हो उठा। कहते हैं ना- घटना का प्रभाव दूर तक जाता है। अतः भीमदेव पृथ्वीराज चौहान से शत्रुता मानने लगा। उसने संयोगिता के स्वयंवर में पृथ्वीराज चौहान के विरुद्ध जयचन्द का साथ दिया। **मूँछों की लड़ाई में देश का नाश हो गया, दर्जनों देशी राजाओं को एक प्रताप सिंह के साथ किये गये निंदनीय कृत्य की सजा अपने प्राण देकर चुकानी पड़ी।** इससे भारतवर्ष में विदेशी शक्तियों को अपने पैर जमाने का अवसर उपलब्ध हो गया। अब से पूर्व देशी राजाओं के युद्ध अपने राज्य विस्तार के लिए हुआ करते थे, जिन्हें किसी सीमा तक उचित माना जा सकता है, परन्तु अब से आगे होने वाले युद्धों में पारस्परिक कलह, कटुता और वैमनस्यता झलकने लगी। इस कलह का लाभ विदेशी आततायियों को मिला।

❑❑❑

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

दृष्टिकोण

दुनिया मतलब की

परमात्मा ने यह सृष्टि चक्र चाहे जिस मकसद से चला रखा हो और लोग चाहे इसके बारे में जो भी मत प्रकट करें परन्तु मेरा मानना है कि स्वार्थ सिद्धि या मतलब के आस पास ही यह सारी दुनिया घूम रही है। हमारे धार्मिक ग्रन्थों ने निःस्वार्थ या निष्काम भावना से काम करने का सुझाव दिया है। अध्यात्म का उपदेश जनहित के काम करके पुण्य कमाने से है। परन्तु कुछ एक अपवादों को छोड़कर स्वार्थ सर्वोपरि है। बहुत से मामलों में प्यार, मोहब्बत, कस्में, वादे, दोस्ती, रिश्तेदारी वगैरह सब दिखावा है, नाटक है, छल है। यह सब सहूलियत या स्वार्थ की नींव पर खड़े हैं। जैसे ही स्वार्थ में टकराव आता है या स्वार्थ सिद्ध हो जाता है लोग एक दूसरे को पहचानने से भी इंकार कर देते हैं। स्वार्थ सिद्धि के लिये लोग गधे को भी बाप तथा मतलब पूरा होने पर बाप को गधा

समझने लग जाते हैं। माँ बेटी के बदले में बेटे को अधिक पसन्द इसलिये करती है क्योंकि उसे पता है कि विवाह के बाद लड़की तो अपने सुसराल चली जाएगी, और अगर दुर्भाग्यवश पति की भी मृत्यु हो जाये तो केवल पुत्र ही उसकी बुढ़ापे में देखभाल करेगा। यही वजह है कि एक के बाद दूसरी बार लड़की होने की संभावना हो तो महिलायें अबोर्शन कराना बेहतर समझती हैं। यह बात अलग है कि आजकल लड़के अपने माँ बाप की अपेक्षा के मुताबिक सेवा तथा देखभाल नहीं करते। आजकल तो मतलब को लेकर मानवीय रिश्ते भी मजाक बने हुए हैं। आजकल कर्ण तथा दुर्योधन, कृष्ण तथा सुदामा जैसी मित्रता कहाँ देखने को मिलती है, हनुमान जैसे सेवकों का तो नामोनिशान नहीं, रामचन्द्र जैसे आज्ञाकारी पुत्र नहीं, पांडवों जैसे भाई नहीं, राजा बलि तथा कर्ण जैसे दानी नहीं, पन्नाधाय जैसी दाई माँ नहीं। आजकल जो भी व्यक्ति जो भी काम

करता है नफे-नुकसान के तराजू में तोल कर करता है। तभी तो दहेज के बिना या कम दहेज वाली दुल्हनों को अच्छे रिश्ते नहीं मिलते। विवाह शादियों में अमीर लोग अमीरों के ही यहाँ जाकर खुश होते हैं, कन्यादान में ढ़ेर सारी राशि तथा उपहार देते हैं, क्योंकि उन्हें यह सब कभी न कभी वापिस मिलने की उम्मीद होती है। मगर गरीब लोगों की शादियों में अमीर लोग कोई न कोई बहाना लगाकर जाने से कतराते हैं और थोड़ा बहुत कन्यादान भेजकर टरका देते हैं। आजकल रिश्ते बनाना 'सामाजिक निवेश' की तरह ही है। नेता एक दूसरे से काम निकलवाने के लिये तरह-तरह के तरीके इस्तेमाल करते हैं। जिस तरह गाय/भैंस का दूध निकालने वाला ग्वाला जानवर का दूध दोहने के बाद उसकी पीठ पर थपकी देता है (जिसका मतलब होता है कि अब अगली बार फिर दूध देने के लिए तैयार रहना) उसी तरह दूसरों से काम निकलवाने के बाद उसे धन्यवाद स्वरूप छोटा आदमी हो तो उसे चाय या शराब पिला देते हैं बड़ा आदमी हो तो उसकी हैसियत के मुताबिक कोई उपहार दे देते हैं या फिर किसी बड़े होटल में अच्छा डिनर करा देते हैं या फिर उसके किसी परिवार के सदस्य को नौकरी पर लगवा देते हैं। आजकल बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ अपने कर्मचारियों से भविष्य में ज्यादा काम कराने हेतु अपने ही खर्चे पर विदेशों में सैर करने जाने की अनुमति देती हैं। वह सब कुछ स्वार्थ सिद्धि से ही प्रेरित होता है। राजनीति का खेल तो सीधे सीधे मतलब से जुड़ा है। जब तक किसी व्यक्ति को फायदा होता रहे तब तक वह अपनी पार्टी तथा हाईकमाण्ड के गुणगान गाता रहता है लेकिन जैसे ही उसे पार्टी में रहना घाटे का सौदा लगता है, वह मेंढ़क की भाँति फुदक कर दूसरी पार्टी ज्वाइन कर सुख की साँस लेता है। वहाँ पहुँचकर उसे मंत्री के पद पर आसीन कराया जाता है या फिर किसी अन्य ऊँचे पद पर नियुक्त किया जाता है। लोकतंत्र में बेशक यह आम बात है लेकिन इसे राजनीतिक वैश्यावृत्ति की संज्ञा दी जा सकती है। मतलब के लिये लोग ना जाने क्या-क्या पापड़ बेलते हैं। कोई एन.

जी.ओ. चलाता है, कोई रामलीला कमेटी का सदस्य/प्रधान बन जाता है, कोई मंदिर का प्रधान बन चढ़ावे की राशि डकार जाता है, कोई स्कूल तो कोई अनाथालय चलाता है। ये सब खाने पीने के तरीके हैं।

हमारे देश में हर साल सूखा, बाढ़, भूचाल आदि प्राकृतिक प्रकोप आते रहते हैं। हमारे यहाँ हर मौके पर सेवा करने

वाले लोग तैयार रहते हैं। लोगों से जनकल्याण के नाम पर चंदा इकट्ठा करते हैं उन्हें कोई पूछने वाला नहीं कि उत्तराखंड में जो महाविनाश हुआ, तुम यहाँ से चंदा इकट्ठा करके वहाँ किसके लिये क्या भले का काम करोगे? लोग टीवी पर संवेदनशील दृश्य देखकर चंदा देते हैं। इस चंदे का हिसाब कोई किसी को ना देता और ना लेता है। हमारा धर्म कर्म बहुत हद तक हमारे मतलब से जुड़ा है। क्या हमारे में से कोई निःस्वार्थ भावना से मंदिर/मस्जिद/गुरुद्वारे जाता है? रुपया, दो रुपये, पाँच रुपये माथा टेककर उससे कई गुणा ज्यादा मूल्य का आशीर्वाद हम परमात्मा से माँग लेते हैं। हम दान देते समय उसका प्रसार किया जाना पंसद करते ही हैं। गरीब की मदद करते समय उससे दुआ की उम्मीद करते हैं। यज्ञ/हवन का कुछ तो उद्देश्य होगा। औरतों द्वारा रखा गया करवा चौथ का व्रत, नवरात्रि/शिवरात्रि पर व्रत भी किसी मतलब को लेकर ही होते हैं। कथा, कीर्तन, सत्संग का मतलब मोक्ष प्राप्ति हो सकता है। जब कोई आदमी बीमार हो जाये तो कृतघ्न परिवारजन उसकी मृत्यु की कामना करते हैं और मर जाने पर दफना/जलाकर उसका नामोनिशान मिटा देते हैं। सचमुच यह पत्थर दिल दुनिया मतलब की है। सावधान।

– **प्रो. शामलाल कौशल**
रोहतक।

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०२/१७

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (पञ्चम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	नु १		म १	■	■	२	फे	२	■	■
३ आ		र ३	■	४	र	४	■	■	५	■
■	६ वे		न्त ६	■	७	क्ति	■	■	८	द्ध

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जब ब्रह्मचर्य, गृहस्थ आश्रम के पश्चात्, वानप्रस्थ और संन्यास लिया जाता है तो यह विधान क्या कहलाता है?
२. बालों का रंग कैसा हो जाये तब वानप्रस्थ अवश्य ले लेना चाहिए?
३. वानप्रस्थी ग्राम की क्या वस्तु छोड़ दे?
४. वानप्रस्थी कहाँ जाकर वसे?
५. क्या वानप्रस्थ आश्रम में पत्नी को साथ रखा जा सकता है?
६. परमेश्वर प्रतिपादक वेद मन्त्रों को स्वामीजी ने क्या कहा है?
७. किसके बिना दुःख का नाश नहीं होता?
८. शरीर रहित जीवात्मा मुक्ति में परमेश्वर के साथ कैसा होकर रहता है

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १२/१६ का सही उत्तर

(१) अज्ञानी (२) धर्म (३) धर्म
(४) अधर्मी (५) दुःखसागर (६) धर्मध्वजी
(७) वाणी (८) धर्म

"विस्तृत नियम पृष्ठ २० पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मार्च २०१७

ऋषि बोध से बोध

प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर समस्त आर्य जन ऋषि बोधोत्सव मनाते हैं। इसी दिवस बालक मूलशंकर के मन में शिवरात्रि की उस रात को जब अन्य सभी सो रहे थे तभी सही अर्थों में जागते बालक मूलशंकर ने जब चूहों को शिवलिंग पर उत्पात करते, प्रसाद खाकर मल मूत्र विसर्जन करते देखा तो उस शुभरात्रि पर बालक मूलशंकर के मन में तीव्र उत्कंठा उत्पन्न हुई कि यह शिवलिंग जो स्वयं अपनी रक्षा उत्पात कर रहे चूहों से नहीं कर पा रहा, वह सृष्टि का रचयिता ,पालनकर्त्ता, संहारक शिव कैसे हो सकता है। बस बालक के मन में उठी इसी तीव्र उत्कंठा ने मूलशंकर के स्वामी दयानन्द बनने की यात्रा का शुभारंभ कर दिया और उन्होंने ईश्वर के सत्यस्वरूप को वेदों की सही व्याख्या करते हुए रखा। देव दयानन्द द्वारा दिए गए ईश्वर के सत्यस्वरूप, वैदिक मान्यताओं, आर्य सिद्धान्तों और नियमों को हम आर्य जन मानते हैं। अर्थात् ऋषि बोध से हम सभी को बोध लेना चाहिए।

अब यक्ष प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या हम सही मायनों में ऋषि बोध से बोध लेकर अब सर्वथा सरल सुलभ आर्य मान्यताओं को सीख समझ कर अपने जीवन में उतार कर सच्चे आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बन पाए। क्या हम देव दयानन्द के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के लक्ष्य की प्राप्ति के प्रथम सोपान कृण्वन्तो स्वयमार्यम् को भी पूरा कर सके? क्या हम सही अर्थों में ऋषि बोधोत्सव को मना रहे हैं या फिर बोधोत्सव मनाने के अधिकारी हैं? अब इन प्रश्नों पर विस्तार से विचार करते हैं।

देव दयानन्द ने आर्य समाज के दूसरे नियम में ईश्वर के सत्यस्वरूप को हम सभी के लिए दिया था और जड़पूजा को आर्यावर्त्त के लिए घातक और लम्बी गुलामी का कारण बताया था। परन्तु हम विचार करें क्या आज भी चेतन मानव जड़ के आगे माथा नहीं पीट रहा? क्या आज भी हमारी मातायें, बहनें, बेटियाँ तथाकथित मुस्लिम कब्रों, पीरों पर अज्ञानतावश सिर नहीं पटक रहीं? यदि यह स्थिति आज भी व्यापक है तो क्या हमने ऋषि बोध से कुछ बोध लिया?

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य देव दयानन्द ने संसार का उपकार करना बताया था। क्या आज हम आर्य समाज के सेवा कार्यों को इतना व्यापक कर पाए हैं कि लोग हमारा अनुसरण करने लगें? क्या आर्य समाजों में संसार का उपकार करने वाले सेवा कार्यों को प्राथमिकता दी जाती है? क्या हम दूसरों के दुःख से दुःखी होकर उसकी सहायता करने के लिए तत्पर होते हैं? यदि नहीं तो क्या हम कह सकते हैं कि हम ने अपने ऋषि के बोध से कुछ बोध लिया?

आर्य समाज की स्थापना पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक कुरीतियों, बुराइयों, विषमताओं के विरुद्ध एक जन आन्दोलन के रूप में की गई थी। क्या आर्य समाज पाखण्ड खण्डन और सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन कर पाया? क्या आज भी समाज में डायन, भूत-प्रेत-बाधा, चमत्कार, नामदान जैसी बुराइयाँ हमारा शोषण नहीं कर रहीं? क्या आज भी तथाकथित कथावाचक हमारी अबोधता और धर्मभीरुता का लाभ उठाकर ईश्वर के स्वयंभू ठेकेदार या स्वयं को ईश्वर घोषित करके हमारा शोषण नहीं कर रहे? यदि ऐसा है तो क्या हम सही मायनों में बोधोत्सव मनाने के अधिकारी नहीं हैं।

देव दयानन्द ने जितना उपकार इस पुरुष प्रधान समाज की संकीर्ण सोच पर तीखा प्रहार करते हुए नारी जाति के उत्थान के लिए किया उसके लिए नारी जाति को सदैव उनका ऋणी बना दिया। देव दयानन्द ने बालविवाह, दहेजप्रथा, सतीप्रथा,

पर्दाप्रथा, नारी उत्पीड़न पर चोट करते हुए नारी शिक्षा का द्वार खोला। परन्तु क्या आज नारी पर अत्याचार बन्द हो गया? क्या आज भी निर्भया जैसे सामूहिक रेपकांड या फिर हॉनर किलिंग जैसी बुराईयाँ विद्यमान नहीं हैं? क्या आज भी कोमल संवेदनशील ममतामयी माँ को उसके ही गर्भ में जन्म ले रहे उसके प्रतिरूप कन्याभ्रूण को उसके सर्वाधिक सुरक्षित स्थान पर मार देने के लिए विवश नहीं किया जाता? यदि ऐसा हो रहा है तो आर्य समाज और शेष समस्त देश ने देव दयानन्द के बताए आदर्शों पर चलकर बोध कब लिया?

देव दयानन्द ने आर्ष शिक्षा पद्धति पर बल दिया। उनके बताए मार्ग पर चलते हुए जहाँ महामानव स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की पुनः स्थापना गुरुकुल खोलते हुए की वहाँ त्यागमूर्ति श्वेतवस्त्रों में सन्यासी महात्मा हंसराज ने एक आन्दोलन के रूप में प्राचीन और नवीन को जोड़कर डी.ए.वी. के रूप में आन्दोलन प्रारम्भ किया। परन्तु हमने देश की आजादी के उपरान्त गुलामी की मानसिकता वाली मैकाले की उस शिक्षा प्रणाली को अपना लिया जो हमारे देश के भावी नागरिकों को आज भी मानसिक दासता के बन्धन में जकड़ रही है। आज भी हमारी इस शिक्षा व्यवस्था में आर्य संस्कार देकर बच्चों को एक अच्छा मनुष्य सच्चा आर्य बनाने का सर्वथा अभाव है। ऐसे में क्या हम कह सकते हैं कि हम बोधोत्सव मनाने के सच्चे अधिकारी हैं या फिर हमने ऋषि बोध से कोई बोध लिया।

एक सामान्य वाहन चालक भी अपने आगे चल रहे वाहन को गड्ढे में गिरा देखकर गड्ढे से बचने के लिए सही दिशा का चयन करके मार्ग परिवर्तन कर लेता है। परन्तु ना जाने क्यों हम आज भी दासता के बन्धन में बंधे तथाकथित विकास के नाम पर पाश्चात्य अंधानुकरण करते हुए अपने साफ दिखाई दे रहे विनाश की ओर तीव्र गति से दौड़ रहे हैं। हमें गति के रोमांच में अपना विनाश और इतिहास की तलहटी में पड़ी सभ्यताओं के नर कंकाल दिखाई नहीं दे रहे जो अट्टाहास कर रहे हैं। आओ तुम भी इतिहास की खाईयों में समा जाओ। यदि सही मायनों में ऋषि बोधोत्सव मनाना है तो आर्य सिद्धान्तों, मान्यताओं को जान मान कर स्वयं आर्य बनते हुए सबको आर्य बनाना पड़ेगा।

- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'
६०२, जी एच ५३

❑❑❑

शत शत नमन हे देव दयानन्द

धन्य हो गयी पावन वसुधा, धन्य हुई धरती गुजरात।
वैदिक दीप को पुनः जलाकर, जगमग कर दिया शुभ प्रभात।।

देव कहूँ महादेव कहूँ, नहीं शब्द पास में हैं मेरे।
गौकरुणानिधि लिख कर गौ हित, कार्य कर दिए बहुतेरे।
खा खा पत्थर ईंट व विष भी, अनथक चलते रहे पग हाथ।।
वैदिक दीप ....

नारी जाति की जो स्थिति, आज देखते हम सारे।
देव दयानन्द के कारण ही, ब्रह्मा बन कर उच्चारे।
ऊँच नीच का भेद मिटा, बतलाया वर्ण व्यवस्था पाथ।।
वैदिक दीप ....

सत्य अर्थ कर दिया प्रकाश, वेदों के देकर सद् प्रमाण।
सच्चे शिव के दर्शन कर, दिखलाया पथ ईश्वर संज्ञान।
ऋग्वेद आदि भाष्य लिख कर, दूर किया भ्रम झंझावात।।
वैदिक दीप ....
बनकर नींव राष्ट्र के प्रहरी, गुँजा दिया सुन्दर जयघोष।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् हेतु, बढ़ा दिए तुमने पग ठोस।
शत शत नमन हे देव दयानन्द, भूल न पाएँ तव सौगात।।
वैदिक दीप ....
त्याग तपस्या ब्रह्मचर्य, तन मन भगवा से आच्छादित।
हे वीर शिरोमणि तुम्हें प्रणाम,
चरणों में शीश झुकाएँ नित।
'विमल' धवल उज्ज्वल यश कीर्ति, फैल रही
चहुँ दिशि दिन रात।।
वैदिक दीप ....

विमलेश बंसल 'आर्या'
- ३२९ द्वितीय तल संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-६५
दूरभाष- ०८१३०५८६००२

❑❑❑

www.thearyasamaj.org

समाचार

आर्य समाज, तलवंडी कोटा का वार्षिकोत्सव संपन्न

आर्य समाज महर्षि दयानन्द नगर तलवण्डी कोटा का सात दिवसीय ४०वां वार्षिकोत्सव समारोह रविवार को सम्पन्न हुआ। समापन

समारोह के मुख्य अतिथि कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पी.के.दशोरा थे। वहीं विधायक चन्द्रकांता मेघवाल भी समारोह में उपस्थित रहीं।

समारोह को संबोधित करते हुए प्रो. दशोरा ने कहा कि अपौरुषेय वेदों की आम जन तक उपलब्धता महर्षि दयानन्द की देन है। जीवन जीने के वैदिक सिद्धान्त सार्वभौमिक हैं। प्रेम, सद्भाव और संस्कारों से युक्त समाज का निर्माण वेदों की अवधारणा है। जिला प्रधान अर्जुदेव चड्ढा ने कहा कि आर्य समाज के द्वारा संसार का उपकार ही प्रमुख्य उद्देश्य है।

वैदिक विद्वान् हरिशंकर अग्निहोत्री ने कहा कि संतानों को संस्कार देना माता पिता का कर्तव्य है। आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने 'श्रद्धा' शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि सत्य को धारण करना ही श्रद्धा है।

चण्डीगढ़ के विद्वान् पं. उपेन्द्र आर्य ने ईश्वर भक्ति की महिमा के भजन प्रस्तुत किए। फरीदाबाद से आए भजनोपदेशक पं. प्रदीप आर्य ने वेद महिमा एवं स्वामी दयानन्द के गुणगान के भजनों की प्रस्तुति दी। मंत्री भैरोलाल आर्य ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

- अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा

आर्यसमाज गाँधीधाम,कच्छ (गुजरात) का ६३वाँ वार्षिक अधिवेशन दि. १६ से १८ दिसम्बर २०१६ में सम्पन्न

आर्यसमाज गाँधीधाम (कच्छ-गुजरात) का '६३ वाँ वार्षिक अधिवेशन' दि. १६ से १८ दिसम्बर २०१६ तक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। डी. ए.वी. पब्लिक स्कूल के प्रांगण में आयोजित तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रातः श्रीमती जाह्नवीजी (आचार्य कुलम् -हरिद्वार) के आचार्यत्व में 'आत्मकल्याण महायज्ञ' हुआ। जिसमें स्थानीय व भारत भर से पधारे हुए १०१ यजमानों ने यज्ञलाभ लिया।

समारोह में विविधि सामाजिक विषयों पर सम्मेलन आयोजित हुए। पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री जी (अहमदाबाद), पं. सत्यानन्द जी वेदवागीश (गाँधीधाम) आचार्या जाह्नवीजी (हरिद्वार), स्वामी श्रद्धानंदजी (पलवल-हरियाणा), स्वामी शांतानन्दजी सरस्वती (कच्छ), पं.धर्मपाल शास्त्री (मेरठ) ने अपनी ओजस्वी वाणी से सारगर्भित विचार प्रस्तुत कर सभी को लाभान्वित किया। पं. नरेशदत्तजी एवं नरेन्द्रदत्तजी (बिजनौर) ने ईशभक्ति के सुमधुर भावपूर्ण भजनों से सभी को भावविभोर कर दिया। महात्मा श्रद्धानंदजी ने अपने अनुभवों से आर्यसमाज गांधीधाम को आर्यजगत् का तीर्थस्थान बताया।

अमेरिका के मिशिगन स्थित डॉ. चमनलाल गुप्ताजी (जो वैदिक विद्वान्, रिटायर्ड प्रिन्सिपाल हैं) की पुस्तक 'हिन्दुत्व' की भारतीय आवृत्ति का विमोचन चंडीगढ़ से पधारी हुई उनकी बहन सुदेश गुप्ताजी के करकमलों से हुआ। यह पुस्तिका आर्यसमाज गाँधीधाम द्वारा प्रकाशित की गयी है।

- वाचोनिधि आर्य

६ जनवरी २०१७ (टिटौली)-

युवा निर्माण अभियान के तत्वावधान एवं बेटी बचाओ अभियान के सहयोग से स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली में चल रहे कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर में 'बेटी बचाओ अभियान' की कार्यकर्त्ताओं को स्वयं सुरक्षा के गुर प्राची आर्या, स्वेता आर्या, राजकुमारी आर्या व रीमा आर्या द्वारा सिखाए गए शिविर की अध्यक्षा एवं बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या ने

कार्यकर्त्ताओं को एक नए अंदाज में समझाते हुए कहा कि जिस तरह वायरस को हटाने के लिए एंटीवायरस कंप्यूटर एवं मोबाइल में प्रयोग किए जाते हैं उसी प्रकार जीवन में आए दुर्व्यसन एवं बुराइयों के वायरस को हटाने के लिए हमें योग रुपी एंटीवायरस का प्रयोग करना चाहिए तभी हम ठीक प्रकार से कार्य कर सकेंगे। बहन जी ने कहा जिस तरह एक मोबाइल की चिप पूरा रिकॉर्ड रखती है चाहे वह अच्छा हो या बुरा। उसी प्रकार मनुष्य में भी परमात्मा ने चित्त लगा रखा है जिसमें हमारे पूर्व जन्म के कार्यों का लेखा-जोखा संग्रहीत होता है। इस संग्रह के आधार पर हमें अगला जन्म मिलता है।

धर्म, जाति, समुदाय, नस्ल या भाषा के नाम पर वोट संबंधी निर्णय स्वागत योग्य- डा सुरेन्द्र जैन

नई दिल्ली। जनवरी ०२, २०१७- राजनीतिक पार्टियों द्वारा धर्म, जाति, समुदाय, नस्ल या भाषा के नाम पर वोट माँगने पर सर्वोच्च न्यायालय के रोक लगाने के फैसले का विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) ने स्वागत किया है। विहिप के अंतर्राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन ने निर्णय को अभूतपूर्व बताते हुए कहा है कि जाति, समुदाय तथा धर्म के आधार पर राजनीति से देश का बहुत नुकसान हुआ है। यहाँ तक कि इससे अनेक बार राष्ट्रीय अखण्डता को भी नुकसान पहुँचा है। उन्होंने कहा कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय से तुष्टिकरण के आधार पर की जाने वाली वोट बैंक की राजनीति पर जो आघात हुआ है उसके दूरगामी परिणाम होंगे और यह फैसला राष्ट्र निर्माण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

उन्होंने यह भी कहा कि अब इस फैसले के अक्षरशः पालन कराने की बड़ी जिम्मेदारी चुनाव आयोग की है। ज्ञातव्य है कि सर्वोच्च न्यायालय ने सोमवार को कहा कि जाति, समुदाय, धर्म तथा भाषा के नाम पर वोट माँगना अवैध है। प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति टी. एस. ठाकुर के नेतृत्व में एक संवैधानिक पीठ ने जन प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा १२३ (३) के आधार पर ४/३ के बहुमत से फैसले के आदेश को पारित किया।

- विनोद बंसल, (राष्ट्रीय प्रवक्ता), विश्व हिन्दू परिषद्

हलचल

मनाया गया मकर संक्रांति पर्व

१४ जनवरी शनिवार को आर्य समाज हिरण मगरी एवं दयानन्द कन्या विद्यालय ने मकर सक्रांति पर्व मनाया। इस अवसर पर श्री रामदयाल आर्य के पौरोहित्य में संपन्न यज्ञ में श्री भूपेन्द्र शर्मा ने अपने जन्मदिवस के अवसर पर मुख्य यजमान के रूप में अन्य यजमानों के साथ विशेष आहुतियाँ प्रदान कीं।

इस सुअवसर पर श्रीमती सुनीता शर्मा एवं सरला गुप्ता ने ईश भक्ति के गीत प्रस्तुत किये। श्री भूपेन्द्र शर्मा ने आयोजन के उद्देश्य के साथ मकर संक्रांति पर्व के वैज्ञानिक व ज्योतिषीय पक्ष को उजागर किया। प्रो. अमृतलाल तापड़िया ने शरद ऋतु में विशेष आहार के सेवन के महत्त्व को समझाते हुए इस पर्वावसर पर तिल, तेल, गुड़ आदि की उपयोगिता को रेखांकित किया। अंत में श्रीमती ललिता मेहरा ने सभी का आभार जताया। विशेष प्रसादोपरांत विद्यालयी छात्राओं का श्री जितेन्द्र पाल शर्मा की स्मृति में खेलकूद एवं भोजन का आयोजन हुआ।

- भंवर लाल आर्य, प्रधान

वैदिक क. उ. मा. विद्यालय आबू रोड का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वैदिक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय आबू रोड के ७५ वर्ष पूर्ण होने पर २० से २२ जनवरी २०१७ में आयोज्य उत्सव सफलता व गरिमा के साथ संपन्न हुआ। समापन अवसर पर विद्यालय की छात्राओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में भावपूर्ण, मनभावन व प्रेरणादायक प्रदर्शन

किया। इस अवसर पर हुए भव्य समारोह के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश आर्य ने अपने उद्बोधन में कार्यक्रम की सराहना करते हुए विद्यालय हेतु ५१००० रुपये के अनुदान की घोषणा की। विद्यालय संचालक श्री मोती लाल आर्य ने दयानन्द विद्यापीठ के अंतर्गत प्रारम्भ किये गए डे बोर्डिंग तथा आवासीय विद्यालय 'दयानन्द पैराडाइज' की विस्तृत रूपरेखा रखते हुए बताया कि श्री सुरेश जी आर्य, जो कि दयानद विद्यापीठ के अध्यक्ष भी हैं, ने इस नवीन प्रकल्प के लिए स्वयं ५१ लाख रूपये तथा अपने मित्र भागीरथ भाई को भी प्रेरित कर उनसे भी ५१ लाख की राशि दिलवायी है। समस्त पंडाल इस घोषणा पर तालियों की गड़गडाहट से गूँज उठा। पीठ निदेशक स्वामी शारदानन्द जी ने भी आशीर्वचन प्रदान किये। इस अवसर पर प्रमुख अतिथियों में श्री विजय सिंह भाटी, श्री रासा सिंह रावत, श्री एम.एल.गोयल, श्री ओ.पी.वर्मा, श्री अशोक आर्य, श्री भवानीदास आर्य, श्री नारायण मित्तल आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर विद्यालय पत्रिका का विमोचन श्री सुरेश जी आर्य के कर कमलों द्वारा हुआ।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के पुरस्कार घोषित

धर्मिष्ठा को 'सत्यार्थ भूषण' उपाधि

जैसा कि विदित है कि न्यास द्वारा सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के प्रत्येक अंक में सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित एक पहेली प्रस्तुत की जाती है। गत १२ अंक के सभी परिणाम प्राप्त होने पर घोषित नीति के अनुसार, सही हल

प्रस्तुत करने वाले प्रतिभागियों के चारों समूहों के सही हल भेजने वालों के नामों में से विजेता के चयन के लिए आज न्यास कार्यालय में कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य की उपस्थिति में न्यास पुरोहित श्री नवनीत आर्य की सुपुत्री आनवी आर्या के हाथों लॉटरी निकलवायी गयी। तदनुसार निम्न प्रतिभागियों को विजेता घोषित किया गया-

प्रथम- धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर (पुरस्कार राशि-5100 तथा 'सत्यार्थ भूषण' उपाधि एवं प्रमाण पत्र)

द्वितीय- श्री इन्द्रजित देव, यमुना नगर (पुरस्कार राशि 1100 तथा प्रमाणपत्र)

तृतीय- श्री किशनाराम आर्य, बीलू (नागौर) (पुरस्कार राशि 700 तथा प्रमाण पत्र)

चतुर्थ- श्री सरस्वती प्रसाद गोयल, सवाईमाधोपुर (पुरस्कार राशि 500 तथा प्रमाण पत्र)

ध्यातव्य है कि यह योजना 'आर्यरत्न डॉ. ओम प्रकाश (म्यामार)' की स्मृति में न्यास के संरक्षक डॉ. सुखदेव चन्द सोनी जी द्वारा प्रायोजित है। योजना आगामी वर्ष में भी जारी रहेगी तथा इसी प्रकार पुरस्कार दिए जावेंगे। अधिक से अधिक पाठक इसमें भाग लेते रहें ऐसा अनुरोध है।

- सुरेश चन्द्र पाटोदी, व्यवस्थापक

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १२/१६ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १२/१६** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री नन्द किशोर प्रसाद; खरसाँवा (झारखंड), श्री किशनाराम आर्य; नागौर (राज.), श्री रमेश आर्य/रमेश गारमेन्ट; दीनानगर (पंजाब), किरण आर्या; कोटा (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री मुकेश पाठक; उदयपुर (राज.), सुनिता भदौरिया; ग्वालियर (म.प्र.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; आर्य समाज शाहपुरा (भीलवाड़ा), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; साबरकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; साबरकांठा (गुजरात), श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), वासुभाई मगनलाल ठक्कर (कारिया); बनासकांठा (गुजरात), श्री गोवर्धन लाल झँवर; सिहोर (म.प्र.), श्री मोहन यादव; सिमडेगा (झारखंड), श्री नारायणलाल राव; उदयपुर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेरी (राज), श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती परमजीत कौर; नई दिल्ली, श्री पृथ्वीवल्लभ देव सोलंकी; उज्जैन (म. प्र.), श्री हिरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), सुबोधकुमार (सुबोधमुनि); ज्वालापुर (उत्तराखण्ड), श्री पुरुषोतम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.)। **सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।**

ध्यातव्य- पहेली के नए नियम पृष्ठ २० पर अवश्य पढ़ें।

स्वास्थ्य

प्रातःकालीन भ्रमण स्वास्थ्यप्रद

Morning walk के बारे में बात करें तो यह आपके दिन को शुरू करने का सबसे अच्छा तरीका है और आप भी जानते हैं अगर आपके दिन की शुरुआत अच्छी होती है तो आपका पूरा दिन बेहतरीन जाता है और ऊपर से health benefits अलग से आपको मिलते हैं। वैसे सुबह-सुबह उठना महाभारत जैसा होता है लेकिन अगर आप कुछ दिन सुबह-सुबह morning walk के लिए जाएँ तो आपको पता चलेगा दुनिया बड़ी हसीन होती है। क्योंकि लेट उठने वालों के साथ यह समस्या होती है उन्हें पता भी नहीं चलता है कि दिन कब निकल जाता है।

मोर्निंग वाक से कुछ इस तरह आपको लाभ मिलता है-

यह आपके दिन शुरू करने का सबसे अच्छा तरीका है क्योंकि सुबह-सुबह जब शांत वातावरण होता है आप अपने बारे में सोच सकते हैं अपनी जिन्दगी को आपको किस दिशा में लेकर जाना है इसके बारे में सोच सकते हैं और सुबह-सुबह का शांत वातावरण आपकी जिन्दगी में बहुत-सी ऊर्जा लेकर आता है।

यह रिसर्च में देखा गया है कि सुबह जल्दी उठकर प्रातः भ्रमण पर जाने वाले लोग उन लोगों की तुलना में अधिक आशावादी होते हैं जो प्रातः भ्रमण पर नहीं जाते हैं। क्योंकि सुबह-सुबह जब आप morning walk पर जाते हैं तो ठंडी और fresh air और उगता हुआ सूरज आपके लिए प्रेरणा और आशा का स्रोत बनता है।

अगर आप कुछ ऐसा काम करते हैं जिसकी वजह से आपको gym जाने या workout करने की फुर्सत नहीं है तो आपके लिए यह वरदान हो सकता है। क्योंकि आईटी कंपनीज में काम करने वाले और कुछ प्राइवेट जॉब करने वाले लोगों को दिन में समय ही नहीं मिलता है और काम का इतना दबाब होता है कि वो अपनी जिन्दगी को जीना भूल चुके होते हैं। उनकी जिन्दगी तनावपूर्ण हो जाती है। ऐसे में अगर प्रातः भ्रमण को आप अपनाते हैं तो न केवल तनाव से राहत मिलती है अपितु उन शांत क्षणों में अपनी जिन्दगी के बारे में बेहतर सोच सकते हैं। क्योंकि उस समय आपका दिमाग हर तरह से फ्रेश होता है। सुबह की हवा आपके mood के लिए बेहतरीन होती है। इसलिए बिजी रखने वाले लोगों के लिए प्रातः भ्रमण फिजिकल Excercises की तरह काम करता है और उन्हें इनके स्वास्थ्य लाभ भी मिलते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण जो बात है वो है कि प्रातः भ्रमण आपके तनाव के स्तर को कम करता है क्योंकि जब आप सुबह-सुबह उठते हैं और बाहर जाते हैं तो आप हरे पेड़ पौधे देखते हैं और साथ ही आपके आसपास का माहौल ऐसा होता है कि कोई ज्यादा शोर नहीं होता और सुबह-सुबह कोई किसी से बात करने वाला नही होता। आपके पास कोई फोन कॉल्स सुबह-सुबह नहीं आते तो कोई disturbance भी नहीं होता ऐसे में आप अपने जीवन में चल रहीं परेशानियों पर गौर कर सकते हैं। अपनी जिन्दगी के goals सेट कर सकते हैं। जिससे आपका stress लेवल भी कम होता है क्योंकि बाकी समय में तो आप अपने बारे में सोच भी नहीं पाते हैं।

शोध में एक बात और भी देखने को सामने आई है कि जो लोग सुबह-सुबह प्रातः भ्रमण के लिए जाते हैं उन लोगों की मानसिक हालत उन लोगों से बेहतर होती है जो लोग नहीं जाते, साथ ही उन लोगों में जिन्दगी की समस्याओं से निपटने के लिए सकारात्मक नजरिया होता है।

अगर आप अपने किसी मित्र के साथ जाते हैं तो यह और भी बढ़िया है क्योंकि आप सुबह-सुबह अपनी समस्याएँ भी उस से साझा कर सकते हैं जिस से आपकी समस्याओं के प्रति कुछ अलग नजरिया भी आपको सुनने को मिलेगा और साथ ही किसी पार्क में अगर आप जाते हैं तो वहाँ मौजूद लोगों से आपकी जान पहचान तो हो ही जाती है ऐसे में आप थोड़े सोशल भी हो सकते हैं।

प्रातः भ्रमण में आपके पाचन तंत्र को भी फायदा होता है। ऐसे में आपकी भूख भी बढ़ती है और आपका पाचन तंत्र भी मजबूत होता है इसलिए भोजन से आपको मिलने वाली उर्जा maximize हो जाती है क्योंकि शरीर उसका पूरा उपभोग कर पाने में सक्षम होता है।

यह आपको अच्छी नींद लेने में भी मदद करता है। क्योंकि प्रातः भ्रमण अपने आप में एक अच्छी

exercises है जिसकी वजह से आप कई तरह की बीमारियों से भी बच सकते हैं और साथ ही यह आपके वजन को कम करने में भी आपकी मदद करता है। आप अगर ज्यादा स्वास्थ्य लाभ लेना चाहें तो अपने चलने की स्पीड को बढ़ा सकते हैं क्योंकि जितना तेज आप चलते हैं उतना ही अधिक आप कैलोरी भी बर्न करते हैं।

इससे आपके cholesterol का लेवल भी कम होता है और कुछ गंभीर बीमारियाँ जैसे heart disease और sugar disease से बचने में मदद मिलती है।

❑❑❑

- साभार- indihealth-in

डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री सभा के प्रधान श्री पूनम सूरी जी को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री की उपाधि से अलंकृत किये जाने पर हम गौरवान्वित तथा भारत सरकार के प्रति कृतज्ञ हैं।

श्री सूरी जी को न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से शतशः बधाई एवं शुभकामनाएँ।

–अशोक आर्य

बुलन्द हौसले

कथा सरित

फ्रान्स के महान् शासक नेपोलियन बोनापार्ट के बारे में सभी जानते हैं। असंभव नाम का शब्द उसके शब्दकोश नहीं था। कोई अवरोध ऐसा नहीं था जो उसके सामने टिक पाता।

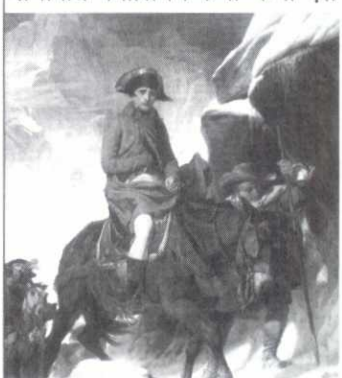

सेनापति नेपोलियन कभी-कभी ऐसे कामों को किया करता था जिन्हें सामान्य इंसान कठिन मानता है। एक बार उसने एल्पस पर्वत पार कर इटली में प्रवेश करने की उद्घोषणा की तथा अपनी सेना के साथ आगे बढ़ने लगा। आगे बढ़ते ही सेना के सामने एक विशाल और गगनचुम्बी पर्वत खड़ा था जिस पर चढ़ाई करना लगभग नामुमकिन लग रहा था। ऐसी विकट परिस्थिति को देखकर सेना में अचानक हलचल-सी पैदा हो गई। परन्तु नेपोलियन ने हार नहीं मानीं उसने अपनी सेना को चढ़ने का आदेश दे दिया। पास में खड़ी एक बुजुर्ग महिला इस आदेश को सुन रही थी। उसने जैसे ही यह सुना वह नेपोलियन के पास आकर बोली 'क्या करना चाहते हो' यहाँ जितने भी लोग आये वह मुँह की खाकर गए। अगर अपनी जिन्दगी प्यारी है तो यहीं से लौट जाओ। बुजुर्ग महिला की बात सुनकर सेनापति नेपोलियन के चेहरे पर एक चमक आ गई। वह क्रोधित होने के बजाय प्रेरित हो गया। उसने अपने गले का हीरों का हार उतारकर उस बुजुर्ग महिला को पहना दिया और बोला मैं आपका शुक्रगुजार हूँ। आपने मेरा उत्साह बढ़ाकर इस कार्य को करने के लिए प्रेरित किया। अगर में जीवित रह गया तो आप मेरी जय-जयकार अवश्य करना। नेपोलियन की यह बात सुनकर उस महिला ने कहा 'तुम ऐसे पहले इंसान हो जो मेरी बात सुनकर हताश और निराश नहीं हुए। जो इंसान करने या मरने और कठिनाईयों का सामना करने का इरादा रखते हैं वे कभी नहीं हारते।'

फिर क्या था नेपोलियन ने आलप्स पर्वत पर सफलतापूर्वक चढ़ाई भी की और इटली को जीता भी।

स्वेट मार्टिन ने बिल्कुल सही लिखा है- 'हमारी अधिकतर बाधाएँ पिघल जायेंगी अगर उनके सामने दुबकने के बजाय हम उनसे निपटने का मन बनायें।'

❑❑❑

साभार- हितोपदेश

सत्यार्थ–पीयूष

राजा कैसा हो?

अथर्ववेद १/२१/१ में लिखा है-

स्वस्तिदा विशां पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अभयङ्करः।।

अर्थात् राजा मंगल देने वाला, प्रजाओं का पालक और विशेषतः शत्रु को वश में करने वाला, बलवान, वनस्पति का रस पीने वाला, अभय करने वाला शत्रुनाशक, वीर तथा प्रजा को आगे ले जाने वाला होना चाहिये।

यजु. ६/४० के अनुसार राजा वह है जिसका कोई विरोधी न हो अर्थात् जिसके पक्ष में सारा देश हो, वह राज्य की अभिवृद्धि, कीर्ति और ऐश्वर्य को बढ़ाने वाला हो।

ऋग्वेद ८/२५/८, ५/६५/५ और ७/३४/११ के अनुसार राजा नियमों का पालन करने वाला, सत्य के अनुसार चलने वाला, क्षात्र तेज से परिपूर्ण तथा साम्राज्य की उन्नति के लिए उत्तम कर्म करने वाला होना चाहिये। वह तेजस्वी, अत्यन्त ज्ञानी, उत्तम कर्म करने वाला, सत्य और सरलता के साथ बढ़ने वाला तथा सत्य का संरक्षक होना चाहिए। क्योंकि राजा गमनशील राष्ट्रों का रूप है, इसलिए उसके पास सब प्रकार का उत्तम क्षात्र तेज होवे अन्यथा वह राज्य का संरक्षण नहीं कर सकेगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में जनता को सावधान करते हुए लिखा है कि वे किस प्रकार के राजा को चुनें-

इन्द्रो जयाति न परा जयाता अधिराजो राजसु राजयातै।
चर्कृत्य ईड्यो वन्द्यश्चोपसद्यो नमस्यो भवेह।। - अथर्व. ६/६८/१

हे मनुष्यों! जो (इह) इस मनुष्य के समुदाय में (इन्द्रः) परम ऐश्वर्य का कर्त्ता, शत्रुओं को (जयाति) जीत सके (न पराजयातै) जो शत्रुओं से पराजित न हो, (राजसु) राजाओं में (अधिराजः) सर्वोपरि विराजमान (राजयातै) प्रकाशमान हो, (चर्कृत्यः) सभापति होने को अत्यन्त योग्य, (ईडयः) प्रशंसनीय गुण कर्म-स्वभावयुक्त, (वन्द्यः) सत्करणीय, (चोपसद्यः) समीप जाने और शरण लेने योग्य, (नमस्यः) सबका माननीय (भव) होवे, उसी को सभापति राजा करें।

मनुष्य समाज में परम ऐश्वर्य व प्रशंसनीय (सर्वोत्तम) गुण कर्मस्वभाव युक्त अर्थात् जिसका बाह्य व आन्तरिक व्यक्तित्व भव्य हो, जिसका सब आदर करते हों, जो मित्र के समान सभी की सहायता करने में सक्षम हो तथा अपनत्व से वशीभूत प्रजाजन जिसके सम्मुख उपस्थित होने में झिझक का अनुभव न करें, जो न्यायाधीश के समान पक्षपात रहित, पूर्ण विद्या व विनय युक्त (विनम्र) हो, जो अपने गुणों व कार्य क्षमता के कारण सभाओं का संरक्षण व संचालन करने में पूर्ण समर्थ हो वही सभापति (राजा) होने का अधिकारी है। प्रसंगवश यहाँ मनुस्मृति में उल्लिखित राजा के आठ गुणों का सामान्य विवेचन समीचीन होगाः-

१. **इन्द्र**- राजा के गुणों का वर्णन करते हुए सर्वप्रथम कहा गया है कि जिस प्रकार इन्द्र प्रचुर वर्षा के द्वारा सृष्टि को तृप्त करता है ठीक उसी प्रकार राजा के लिए भी आवश्यक है कि वह प्रजा के लिए भी आवश्यक सभी प्रकार की साधन सुविधाओं की व्यवस्था करे।

२. **वायु**- मनुष्य व प्राणी मात्र को अन्न, जल व वायु परम आवश्यक है। अन्न के अभाव में कुछ समय जीवित रहना संभव है। किन्तु वायु के अभाव में कुछ क्षण भी जीवित नहीं रहा जा सकता। अतः उसे प्राण वायु (प्राण) भी कहा गया है। जिस प्रकार वायु सर्वव्यापक है तथा प्राणी मात्र को प्राणप्रिय है, उसी प्रकार **राजा भी प्रजा को प्राण-प्रिय हो**। उसके अतिरिक्त अभिप्राय यह भी है कि राजा को स्वयं भेष बदलकर अथवा गुप्तचरों के माध्यम से वायु के समान सर्वत्र व्याप्त रहना चाहिये ताकि प्रजा के सुखः दुख व शत्रु की गतिविधियों से अवगत रह कर तद्नुसार व्यवस्था कर सके।

३. **यम**- यम शब्द का अर्थ नियंत्रण है तथा यहाँ नियन्त्रण शक्ति के अतिरिक्त परमेश्वर की मारक शक्ति भी अभिप्रेत है। इसका अर्थ यह है कि जिस प्रकार न्यायकारी परमेश्वर कर्मों के आधार पर पक्षपात रहित यथायोग्य फल प्रदान करता है, उत्तम कर्मों के फलस्वरूप सुख एवं अधम (नीच) कर्मों के फलस्वरूप दुःख एवं कष्टमय जीवन प्रदान करता है। ठीक उसी प्रकार **राजा को भी अपने पराये का भेद किए बिना पक्षपात रहित होकर सदाचारी व्यक्ति को सम्मान वा पुरस्कार तथा दुराचारी व्यक्ति को दण्ड देना चाहिए**। ताकि प्रजा नियंत्रित रहे सके।

४. **अर्क**- जिस प्रकार सूर्य सृष्टि को प्रकाशित कर अंधकार से मुक्त करता है ठीक उसी प्रकार राजा को भी अविद्या एवं अन्याय रूपी अंधकार को नष्ट करने वाला होना चाहिए। साथ ही जिस प्रकार सूर्य अपनी रश्मियों द्वारा प्राणियों को कष्ट दिए बिना जलाशयों से जल ग्रहण कर वृष्टि के माध्यम से कई गुना पुनः पृथ्वी को देता है ठीक उसी प्रकार राजा के

लिए भी आवश्यक है कि वह **प्रजा को कष्ट पहुँचाये बिना उचित कर वसूल करे तथा पुनः उसका उपयोग प्रजा हित में करे ताकि राष्ट्रीय विकास हो सके।**

५. **अग्नि-** अग्नि असहनीय, तेजयुक्त व दोष नाशक है। जिस प्रकार अग्नि के प्रभाव से धातुओं के दोष नष्ट हो जाते हैं ठीक उसी प्रकार राजा को भी दुष्टों, अपराधियों व अनाचारियों को अपने प्रभाव से संतापित करते हुए व दण्डित कर, सदाचारी बनाने वाला (दोष नाशक) होना चाहिए।

६. **वरुण-** जिस प्रकार जल प्रवाह के भँवरपाश में फँसकर प्राणी आगे गति न कर नियंत्रित हो जाते है, उसी प्रकार राजा के लिए भी आवश्यक है कि वह अपराधियों व शत्रुओं को बंदी बनाकर कारागार में डाल दे, ताकि उनकी भावी गतिविधियाँ नियंत्रित रहें।

७. **चन्द्र-** जिस प्रकार चन्द्रमा प्रकाशक, आह्लादकारी व शीतलता प्रदान करने वाला होता है ठीक उसी प्रकार राजा के लिए भी आवश्यक है कि वह श्रेष्ठ पुरुषों को आनंदित करने वाला हो, उसे देखकर प्रजा-जनों को शान्त एवं प्रसन्न होना चाहिए। **महर्षि के अनुसार राजा व प्रजा में पिता-पुत्र के समान सम्बन्ध होना चाहिये।**

८. **वित्तेश-** यह शब्द कुबेर एवं पृथ्वी के लिए प्रयुक्त होता है जिस प्रकार कुबेर (परमेश्वर) व पृथ्वी प्राणियों का पोषण करते हैं, ठीक उसी प्रकार राजा को भी याचकों, विद्वानों, परिचायकों व अनुचरों आदि को यथायोग्य दानादि के द्वारा अनुग्रहीत करते रहना चाहिये ताकि उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। संक्षेप में **राजा का दानशील होना भी आवश्यक है।**

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में राजा के उक्त गुणों की आवश्यकता समझने का प्रयास किया जाय तो ज्ञात होगा कि राजा का इन्द्र व्रत 'योजना विभाग' की ओर संकेत है तो सूर्य व्रत 'वाणिज्य, व्यवसाय तथा आयकर विभाग' की ओर, मरुत व्रत 'गुप्तचर विभाग' को प्रदर्शित करता है। आग्नेय व्रत 'दण्ड व्यवस्था' को तथा कुबेर व्रत 'प्रशासन द्वारा जनहित में जारी बाढ़ सहायता, अकाल-सहायता' की ओर संकेत है तथा चन्द्र व्रत 'प्रजा-प्रशासन के मधुर सम्बन्धों' की ओर संकेत है। राजा के सद्गुणों का उल्लेख करते हुए पं. मंगल प्रसाद उपाध्याय ने अपनी पुस्तक आर्यस्मृति में लिखा है कि-

मुकुटैर्मणि युकैर्वा प्रासादैवा खचुम्बिभिः।
न राजते तथा राजा यथालोकोपकर्मभिः॥

अर्थात् राजा की शोभा मणि जड़ित मुकुटों व गगनचुम्बी महलों से नहीं अपितु लोकोपकारक कार्यों से होती है। अतः राजा को चाहिए कि वह जनहित में कार्य करे।

❑❑❑

सम्पादक- अशोक आर्य

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

• **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

• सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) | भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) | डॉ.अमृत लाल तापड़िया (संयुक्तमंत्री-न्यास)

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली

www.thearyasamaj.org

www.thearyasamaj.org

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 February-2017 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य